भूदान-यज्ञ

भूदान-यज्ञ मूलक ग्रामोद्योग प्रधान अहिंसक क्रान्ति का सन्देशवाहक-साप्ताहिक

सर्व सेवा संघ का मुख पत्र

वर्ष : १५ अंक : ४६

सोमवार ८ सितम्बर, '६६

अन्य पृष्ठों पर

सेवा से मेवा —सुरेशराम ६१८

हम अपनी राह —सम्पादकीय ६१९

जीवेम शरदः शतम् ६२०

गाँव-गाँव में ग्रामस्वराज्य —विनोबा ६२१

क्रान्ति के नये सन्दर्भ में मार्ग-खोजन की प्रक्रिया —धीरेन्द्र मजूमदार ६२३

खान अब्दुल गफ्फार खान का स्वागत —जयप्रकाश नारायण ६२७

चरखे की क्रान्तिकारी अवधारणा आचरित कब होगी ? —रामनारायण सिंह ६२९

—मदन मोहन साहु ६३०

अन्य स्तम्भ

प्रादेशिक पत्र, आन्दोलन-समाचार

आभार

हमारी अपील पर बहुत से साथियों ने संकल्पपूर्वक 'भूदान-यज्ञ' के ग्राहक बनाने का अभियान तीव्र गति से शुरू किया है। हम इसके लिए अत्यन्त आभारी हैं।

—सम्पादक

सम्पादक

राममूर्ति

सर्व सेवा संघ प्रकाशन,

राजघाट, वाराणसी-१ उत्तरप्रदेश

फोन : ४२८५

सत्याग्रह और चरखा

सत्याग्रह और चरखे में शरीर और प्राण का सम्बन्ध है और मेरे विश्वास का जितना विरोध होता है उतना ही वह और पक्का होता है। ऐसा न होता तो मैं मूर्ख नहीं हूँ, जो डाक्टरों की सलाह की परवाह न करके भी रोज-रोज, घर पर हूँ या गाड़ी में, चरखा चलाता ही रहता। मैं चाहता हूँ, आप भी इतनी ही श्रद्धा से चरखा चलायें। अगर आप ऐसा नहीं करेंगे और आदतन खादी नहीं पहनेंगे, तो आप मुझे भी धोखा देंगे और दुनिया को भी।

अवश्य ही मैं तो मरूँगा तब भी मेरी जुबान पर अहिंसा ही होगी; लेकिन जिन मायनों में मैं बँधा हुआ हूँ, आप नहीं बँधे और इसलिए आपको अधिकार है कि दूसरा कार्यक्रम बनाकर देश को आजाद करा लें, लेकिन आप यह भी न करें और चरखा भी न चलायें और यह चाहें कि मैं लड़ूँ तो यह असंभव है।

मैं जानता हूँ कि आप मुझे साथ लिये बिना नहीं लड़ेंगे, लेकिन आपको जान लेना चाहिए कि मैं यहाँ करोड़ों मूक लोगों का प्रतिनिधि बनकर आया हूँ और उसी हैसियत से लड़ूँगा; क्योंकि मैं उन्हीं के लिए जीता हूँ और उन्हीं के लिए मरना चाहता हूँ। उनके प्रति मेरी वफादारी और सभी वफादारियों से बड़ी है और अगर आप मुझे मार डालें या छोड़ दें तो भी मैं चरखा नहीं छोड़ूँगा। इसका कारण भी वही है। मैं जानता हूँ कि मैंने चरखा-सम्बन्धी शर्तें ढीली कर दीं, तो जिन करोड़ों बेजुबानों के लिए मुझे ईश्वर को जवाब देना है, उन पर तबाही आ जायगी।

इसलिए अगर आपका चरखे में उसी अर्थ में विश्वास न हो, जिसमें मुझे है, तो दया करके आप मुझे छोड़ दीजिए। चरखा सत्य और अहिंसा की बाहरी निशानी है। इन्हें यदि आप हृदयंगम नहीं करेंगे तो आप चरखे को स्वीकार नहीं करेंगे। इसलिए याद रखिए, आपको भीतरी और बाहरी, दोनों तरह की शर्तें पूरी करनी हैं। आपने भीतरी शर्तें पूरी कर ली तो आप विरोधी से वैर-भाव रखना छोड़ देंगे, आप उसके नाश का प्रयत्न नहीं करेंगे, बल्कि उस पर दया करने की ईश्वर से प्रार्थना करेंगे। इस कारण सरकार के कुकर्मों का भण्डाफोड़ करने पर सारी शक्ति न लगाइए, क्योंकि जो लोग सरकार चला रहे हैं उनका हृदय-परिवर्तन करके हमें उन्हें मित्र बनाना है। आखिर प्रकृति से तो कोई भी दुष्ट नहीं होता। अगर दूसरे दुष्ट हैं तो क्या हम कम हैं ? यह वृत्ति सत्याग्रह में निहित है। आप इससे सहमत न हों तो भी मैं कहूँगा कि आप मुझे छोड़ दीजिए; क्योंकि मेरे कार्यक्रम और ध्येय में विश्वास हुए बिना और मेरी शर्तें स्वीकार किये बिना आप मेरा अनर्थ करेंगे, अपना अनर्थ करेंगे और हम सबको जो कार्य प्रिय है उसका भी अनर्थ करेंगे।

मो. क. गांधी

रामगढ़ कांग्रेस : सन् १९४० में किये गये भाषण से

www.vinoba.in

संसद-सदस्यों का भत्ता : सेवा से मेवा

अभी हाल ही में लोकसभा और राज्यसभा, दोनों ने संसद-सदस्यों से भत्तों में वृद्धि आदि सम्बन्धी बिल पास किया है। इसके अनुसार दैनिक भत्ता इकतीस रुपये से बढ़ाकर इक्यावन रुपये कर दिया गया और आने-जाने के लिए पहले दर्जे के किराये से बढ़ाकर दो बार हवाई जहाज का किराया और अन्य सुविधाएँ भी दी गयी हैं। इस तरह चंद मिनटों के अन्दर भारत की प्रजातंत्र के कर्णधारों ने अपनी दैनिक आमदनी ६४ प्रतिशत बढ़ा ली और दूसरी सहूलियतें भी ले लीं। संसद ऐसी संस्था है कि इसके मन में जो आये सो कर सकती है, और जिससे कोई जवाब तलब नहीं किया जा सकता। लेकिन जिस देश के निवासियों की दैनिक आय केवल ८९ पैसे हो, उसके प्रतिनिधियों द्वारा अपने लिए ५१ रुपये रोज लेना कहाँ तक नैतिक व न्याय-संगत है?

कहा गया है कि भत्ते में यह वृद्धि महँगाई के कारण जरूरी समझी गयी। कौन नहीं जानता कि फरवरी सन् १९६४ में ही इसे २१ से ३१ रुपये किया गया था। तो क्या पाँच बरस में महँगाई इतनी बढ़ गयी कि संसद-सदस्यों को ३१ की बजाय ५१ रुपये लेना जरूरी हो गया? संसद के बाहर जाकर हमारे मित्र नयी पीढ़ी को आये दिन यही उपदेश दिया करते हैं कि देश के लिए त्याग करो। लेकिन अपनी औलाद और नौजवानों के सामने हम उल्टा नमूना पेश करेंगे तो उन पर क्या असर होगा? खुद सुविधाएँ लेकर उनसे वैराग्य की उम्मीद रखना बबूल बोकर आम पाने की आशा करने जैसा होगा।

इससे भी ज्यादा आश्चर्य यह है कि यह फैसला सर्वसम्मति से किया गया। शायद ही किसी दूसरे मौके पर संसद एकमत होती हो। बात-बात में गरीबों की रट लगानेवाले और उनका नाम लेकर मेज ठोकनेवाले, धरना देनेवाले, बड़े-से-बड़े क्रान्तिकारी, सब चुप लगा गये। किसी माई के लाल ने न इस पर 'वाक आउट' किया और न काम-रोको प्रस्ताव पेश किया। और न कांग्रेसवालों ने या और किसी ने अपने "अन्तःकरण की पुकार" पर इस बिल के खिलाफ स्वतंत्र मत देने की माँग की। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि देश में न कोई कांग्रेसी पक्ष है, न कम्यूनिस्ट, न जनसंघी है और न समाजवादी, न स्वतंत्र है और न क्रान्तिकारी। सबके सब यथास्थितिवादी हैं। चाहे वे सिर पर कोई टोपी लगा लें, चाहे किसी रजिस्टर में अपना नाम लिखा लें, चाहे किसी चीज को अपना निशान बना लें, वे सब दरिद्रनारायण की दृष्टि से एक हैं, नोचनहार। और उनका धन्धा है देश से ज्यादा-से-ज्यादा लेना और उसे कम-से-कम देना। ऐसी हालत में संसद के प्रति लोगों की क्या धारणा बनेगी और यह संसद कब तक सही सलामत चल सकेगी? जनतंत्र और लोकशाही की आड़ में यह कोरा सामन्तवाद और तानाशाही नहीं है तो क्या?

समाजवाद की दृष्टि से हमें यह कदम बहुत अनुचित प्रतीत होता है। जब संसद-सदस्य अपने भत्ते बढ़ा लेंगे तो नौकरशाही पर वे क्या अंकुश रख सकेंगे? जब अधिकारी और कर्मचारी, दोनों को ही सुख-सुविधाओं का ज्यादा ख्याल हो, तो समाज को बदलने और शोषण खतम करने में वे कैसे समर्थ हो सकेंगे? केवल कानून बना देने से अगर समाजवाद आ सकता होता तो स्टालिन रूस में और माओ चीन में अपने सपनों का राज्य जरूर खड़ा कर लेते। समाजवाद भी कुर्बानी माँगता है। और जिस हद तक कुर्बानी दी जायेगी उसी हदतक वह फूलेगा-फलेगा। बिना कुछ दिये समाजवाद के लक्ष्य पर पहुँच जाने की आशा करना अपने को धोखे में रखना है। और देने की बजाय लेना तो समाजवाद पर सीधा प्रहार समझा जायेगा। जनता भी कहेगी कि एक तरफ से तो हमें समाजवाद के सब्ज-बाग दिखाये जा रहे हैं और दूसरी तरफ इस तरह भत्ते बढ़ाये जा रहे हैं।

इस भत्ता-वृद्धि का एक और भी खतरनाक नतीजा निकलेगा। वह यह कि सारे सरकारी कर्मचारी और अधिकारी, मजदूर और कामगार अपना वेतन बढ़ाने की माँग जोर-शोर से करेंगे। भारत सरकार किस मुँह से कह सकेगी कि उसके पास पैसा नहीं है? नतीजा यह होगा कि जुलूस निकलेंगे, हड़तालें होंगी, गोली चलेगी, खून-खराबी होगी, बेगुनाह लोग मारे जायेंगे, नारियों का सुहाग लुटेगा, बच्चे अनाथ होंगे। इतिहास यही कहेगा कि गांधी-शताब्दी के साल भारत में जो हिंसा बढ़ी उसका एक महत्वपूर्ण कारण यह था कि संसद-सदस्यों ने अपने भत्ते बढ़ा लिये।

—सुरेश राम

क्रान्ति की परिस्थिति

"क्रान्ति की परिस्थिति तो वक्त तैयार करता है, क्रान्तिकारी अवसर की पहचान कर उसका उपयोग कर लेता है। महात्मा गांधी में वक्त को पहचानने की विलक्षण प्रतिभा थी।"

× × ×

इतिहास का तथ्य

"जब कांग्रेस की वर्किंग कमेटी के सामने पहली बार यह बात आयी कि अंग्रेजी सरकार के प्रतिनिधि के सामने नेहरू और सरदार पटेल वचन दे चुके हैं भारत का विभाजन स्वीकार करने के लिए, तो मैंने कहा था कि कोई भी नेता, चाहे वह कितना भी बड़ा क्यों न हो, वर्किंग कमेटी के पीठ पीछे दिये गये उसके वचन को क्यों माना जाय?...लेकिन कोई जवाब नहीं मिला। गांधीजी ने उस समय कहा कि यद्यपि ये लोग वचन दे चुके हैं, फिर भी अगर वर्किंग कमेटी मुझे अधिकार दे, तो मैं कोई सूरत निकाल लूँगा।...उस समय मैंने गांधीजी को पहली बार देखा था कि वे कितने अकेले हैं।...जिन गांधीजी का इस्तेमाल करने के लिए कितनी बार संकट की घड़ी में वर्किंग कमेटी ने उन्हें अपना 'डिक्टेटर' बनाया, उन्हीं गांधीजी द्वारा खुद यह माँग पेश किये जाने पर भी उनको अधिकार नहीं दिया गया।...इस तथ्य पर बराबर पर्दा डालने की कोशिश की जाती रही है।"

आरा : २८-८-'६९ —जयप्रकाश नारायण

सम्पादकीय

हम अपनी राह

दिल्ली में एक उफान था, आया और गया। सिद्धान्त और संकल्प वहीं तक ठीक हैं जहाँ तक वे सत्ता के सहायक हैं। वास्तव में सिद्धान्त अब सत्ता के साधन मात्र होकर रह गये हैं। सत्ता के लिए सिद्धान्त के साथ चाहे जितना समझौता करना हो किया जा सकता है; यह राजनीति की व्यावहारिकता है। दिल्ली में शोरगुल बहुत मचा, सिद्धान्तों की दुहाई बहुत दी गयी, लेकिन अंत में इस बात पर समझौता हो गया कि सत्ता जहाँ है वहाँ रहनी चाहिए, नहीं तो पार्टी का क्या होगा, और पार्टी के प्रधान मंत्री और अध्यक्ष का क्या होगा ? अब घाव दिखाई नहीं देगा, अन्दर-अन्दर नासूर बनेगा।

गाँव का आदमी दूर से दिल्ली की बातें सुनता है। सुनकर कभी खुश होता है, और कभी सुनकर भी अनसुनी कर देता है। नापने का गज उसका दूसरा है। वह हर चीज को अपने पेट और पीठ की तराजू में तौलता है। वह पेट और पीठ की ही भाषा समझता है। बैंकों को सरकार ने अपने हाथ में लिया तो उसने इन्दिराजी की जय-जयकार की। बैंकों के राष्ट्रीयकरण से उसने क्या समझा ? जिस मजदूर के पास भूमि का वह टुकड़ा भी अपना नहीं है जिसपर उसकी झोपड़ी खड़ी है, वह इन्दिराजी से क्यों खुश हुआ ? उसे क्या मिलेगा ? क्या उसकी मजदूरी बढ़ेगी ? पेट भरेगा ? तन ढँकेगा ? बैंक का मालिक चाहे जो हो, उसे बैंक से क्या लेना-देना है ? उसकी खुशी सिर्फ यह सोचकर है कि अच्छा हुआ इन्दिराजी ने धनियों के हाथ से उनकी दौलत छीन ली। धनी हमारे दुश्मन हैं; इन्दिराजी धनियों की दुश्मन हैं, इसलिए इन्दिराजी हमारी दोस्त हैं। तो, क्यों कांग्रेस के कुछ नेता इन्दिराजी के खिलाफ हैं ? जरूर इसी-लिए होंगे कि इन्दिराजी गरीबों के पक्ष में हैं, और ये नेता धनियों के। यह मत्सर का तर्क है। आज देश में यही तर्क काम कर रहा है। मत्सर का यह तर्क देश को कहाँ ले जायगा, इसकी चिन्ता किसको है ? कांग्रेस के झगड़े को देखने का गाँववाले गरीब के पास दूसरा कोई चश्मा नहीं है।

गरीबों के मन में एक नयी आशा बँधी है कि इन्दिराजी सब कुछ कर देंगी। समाज और सरकार में विश्वास टूट चुका है, आशा का कच्चा धागा बस व्यक्ति से बँधकर बचा हुआ है। इन्दिराजी कुछ कर देंगी, जयप्रकाश कर देंगे, विनोबा कर देंगे, आदि। शायद यह आशा का अंतिम चरण है। लेकिन इसके बाद ? यह तो निश्चित है कि इस तरह की कोई आशा पूरी नहीं होनेवाली है।

जिन दिनों दिल्ली में हलचल थी, और एक-एक दिन 'आन्दोलन' ने भरा हुआ था, उन्हीं दिनों बिहार के मुजफ्फरपुर जिले के सुप्रसिद्ध वैशाली क्षेत्र के एक गाँव में चार दिन बैठकर जयप्रकाशजी अपने पुराने और नये साथियों के साथ 'ग्रामदान से ग्रामस्वराज्य' की योजना बना रहे थे। कहाँ अखबारी दुनिया की सारी 'उथल-पुथल' और कहाँ दुनिया के कोलाहल से दूर एक गाँव में कुछ दीवानों का एकान्त क्रान्ति-चिन्तन ? गाँववालों को इस चिन्तन का क्या पता ? उन्हें दिल्ली की बातें मालूम हैं, खबर के समय वे पड़ोस का रेडियो सुनने के लिए इकट्ठा भी हो जाते हैं, क्योंकि रेडियो, अखबार, नेताओं के भाषण, सबने उनके कान में बार-बार यही बात डाली है कि तुम्हारे सवालों का जवाब दिल्ली में है, पटना में है, लखनऊ में है। गाँव तो सिर्फ पैदा होने और मरने की जगह है, और गाँव में जितने पड़ोसी हैं वे सब तुम्हारे जन्म-जात दुश्मन हैं। गाँव की चेतना गाँव से बाहर निकलती है तो सीधी राजधानी पहुँचती है।

ग्रामस्वराज्य लोकचेतना का स्तर और दिशा बदलने का आन्दोलन है। जब सही लोक-चेतना जगेगी तो लोकशक्ति उभरेगी। सारे प्रश्नों का अंतिम उत्तर लोकशक्ति ही है। इसीलिए वैशाली की गोष्ठी ने तय किया कि राजगीर के सर्वोदय-सम्मेलन के बाद बिहार में नवम्बर से अप्रैल तक पूरे ६ महीने गाँव-गाँव में ग्रामसभाएँ बनाने का सघन अभियान चलाया जाय। अरुचि, आलस्य और अविश्वास से भरे हमारे समाज में क्रान्तिकारी को अभियान की ही पद्धति अपनानी पड़ेगी, धीरे-धीरे चलने से काम नहीं होगा। अभियान में चेतना को झकझोरने की शक्ति होती है। ग्रामसभाओं के बनने का अर्थ है ग्राम-स्वराज्य की क्रान्ति के लिए लोकाधार (मैस-सैंक्शन) का तैयार होना। एक बार यह आधार बन जाय तो सहकार और प्रतिकार दोनों के लिए रास्ता साफ हो जाता है। उसके बिना न एक संभव है, न दूसरा।

ग्रामसभा से लोकतंत्र और समाजवाद की वह प्रक्रिया शुरू होगी 'जिसे नीचे से निर्माण' (बिल्डिंग फ्राम बिलो) कहते हैं। दिल्ली 'ऊपर से निर्माण' (बिल्डिंग फ्राम एबव) का अभ्यास कर रही है। करे जबतक कर सके, हमें अपनी राह चलना है। अगर हम तेज चल सके तो मंजिल हमारे हाथ है !

अपनी जेब टटोलें

भारत सरकार की ओर से घोषणा हुई है कि १९६७-६८ में भारत की आमदनी ८·९ प्रतिशत बढ़ी है। हजार-हजार बधाई !

एक बार अमेरिका के एक प्रसिद्ध दैनिक में एक विनोद छपा था। न्यूयार्क के किसी कारखाने में शाम को छुट्टी हुई। झुण्ड-के-झुण्ड मजदूर बाहर आये। रास्ते में अखबार का सायं-संस्करण लेकर फेरीवाला गुजरा। दो साथी साथ जा रहे थे। उनमें से एक ने अखबार की एक प्रति खरीदी। ऊपर के पन्ने पर मोटे-मोटे अक्षरों में छपा था : 'अमेरिका के खजाने में खरबों डालर का सोना'। बहुत खुश होकर उस साथी ने दूसरे साथी को दिखाया। दूसरा साथी कुछ बोला नहीं, जैसे उसने देखा ही नहीं। चुपके से उसने अपना हाथ अखबार पढ़नेवाले साथी के पैण्ट की जेब में डाला। उसने पूछा : 'यह क्या कर रहे हो' ? उत्तर मिला : 'कुछ नहीं, जरा देख रहा हूँ कि सोना तुम्हारी जेब में कितना है !'

आप लोग भी जरा अपनी-अपनी जेबें टटोल लें !

www.vinoba.in

जीवेम शरदः शतम् !

हम अनेक में एक

"बाबा जनता का सामान्य सेवक है, और थोड़ा-सा आध्यात्मिक ग्रन्थों का ज्ञान रखता है, और उसकी ईश्वर पर श्रद्धा है। हम सारे सामान्य सेवक हैं। मैंने कहा था कि पंडित नेहरू के जाने के बाद जो नेता होंगे वे जनता में एक होकर रहेंगे। इसके आगे नेता नहीं, 'गण-सेवक' होंगे। नेताओं का जमाना अब समाप्त हो गया। पं० नेहरू आखिरी नेता थे। इनके आगे वह खाता खतम है। मैंने कहा था कि इसके आगे उनसे भी बढ़कर नेता होंगे, लेकिन वे अनेक में से एक होंगे। उसके लिए बहुत बार मैं एक कहानी सुनाया करता हूँ। वर्ड्सवर्थ अंग्रेजी के एक बड़े कवि हो गये। जहाँ वह रहते थे वहाँ एक पहाड़ था। वह घूमने के लिए वहाँ जाया करते थे। किसी ने पूछा कि आपका स्मारक कैसे बनाया जाय? तो उन्होंने बताया कि वह जो पहाड़ है, उसमें कई पत्थर अच्छे-अच्छे थे। उनको सारे लोग कारीगरी के लिए ले गये। फिर भी एक पत्थर ऐसा पड़ा है, जिसका आकर्षण किसी को कारीगरी के लिए नहीं हुआ। वह मैंने देखा है। उसका स्मारक के लिए उपयोग किया जाय। उस पर मेरे जन्म और मृत्यु की तारीख हो और यह लिखा हो—"वन ऑफ द मेनी" (अनेक में से एक), वैसे ही हम भी अनेक में से एक हैं, यह हमको समझ लेना चाहिए। इस कविता को कहते हुए मैं कभी अघाता नहीं।"

—विनोबा

क्रान्ति-दर्शी विनोबा

११ सितम्बर '६९ को जीवन-काल के ७४ साल पूर्ण होंगे

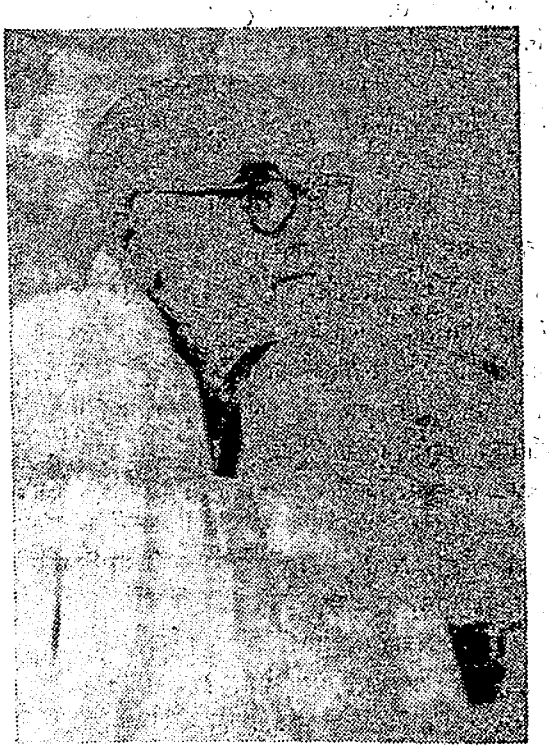

जन-प्रस्थी धीरेन्द्र भाई

१० सितम्बर '६९ को जीवन-काल के ६९ साल पूर्ण होंगे

...और मैं ठेठ देहाती बन गया

"जब मैं गाँव में रहने लगा और गाँववालों के घरों में ठहरने लगा, तो एक बात मुझे बहुत परीशान करने लगी। मैं अपने और ग्रामीण जनता के बीच एक व्यवधान महसूस करता था। गाँव के लोग मुझको अपना नहीं समझते थे। वे मेरा सम्मान करते थे, मुझे प्यार नहीं करते थे। तो, मैं अध्ययन करने लगा कि क्या कारण है कि वे लोग मुझे अपना नहीं मान रहे हैं!

मैंने पाया कि मेरे अन्दर एक ऊँची विशिष्टता की भावना (क्वालिटी कामप्लैक्स) भरी हुई है। मैं गाँव के लोगों को कुछ नीचे दर्जे का मनुष्य मानता था, और उनकी कुछ हरकतों को घृणा की दृष्टि से देखता था। इसके लिए मैंने प्रयत्नपूर्वक अभ्यास किया कि मैं सहज रूप से उनके परिवार में समा सकूं। मैंने उनकी रहन-सहन, बातचीत और वेषभूषा आदि सहजरूप से अपनाने का प्रयास किया। खाने-पीने के मामले में भी मैं सहज रूप से उनके साथ शामिल होने लगा। बच्चों से खेलना तथा परिवारों की समस्याओं के बारे में सोच-विचार करने में उनका साथ देना, आदि बातें करने लगा और धीरे-धीरे अपने साथियों की निगाहों में भी एक ठेठ देहाती बन गया।"

—धीरेन्द्र मजूमदार

गाँव-गाँव में ग्रामस्वराज्य

www.vinoba.in

–भारत को अजेय बनाने का एक ही उपाय–

[चायबासा (सिंहभूम, बिहार) क्षेत्र के मानकी, मुंडा आदि आदिवासी लोगों की सभा में अखिलभारत झारखण्ड पार्टी के अध्यक्ष श्री बागुन सुम्बरुई ने विनोबा का स्वागत करते हुए कुछ प्रश्न प्रस्तुत किये। कुछ प्रश्न लिखित भी पूछे गये। प्रस्तुत हैं उस सभा में विनोबा द्वारा दिये गये प्रश्नोत्तर। —स०]

श्री बागुन सुम्बरुई :

आज ऐसे दिन पर देश के महान सामाजिक कार्यकर्ता, भूदान आंदोलन के प्रणेता सन्त विनोबाजी का दर्शन हम लोगों को हो रहा है। यह बड़े सौभाग्य और खुशी का दिन है। हम लोग इस बात को मानते हैं कि अखिलभारतीय स्तर पर ग्राम-स्वराज्य आंदोलन का प्रचार जारी है। आप २० वर्ष से इस विचार के प्रचार में लगे हैं। यहाँ पर पहली बार लगभग सन् १९५२-५३ में आये थे। यह आपका यहाँ पर दूसरी बार आगमन हुआ है। बाबाजी ग्रामदान, प्रखण्ड-दान, जिलादान और इस प्रकार से प्रान्तदान की माँग करते हैं। इस विषय में जिस प्रकार से हम लोगों को उनके कार्यकर्ताओं से जानकारी प्राप्त हुई है, उसमें हमारे छोटा नागपुर की जनता को क्या हानि होगी और क्या लाभ होगा, यह आपने जगह-जगह पर सुना होगा। उनको हमने कोई आश्वासन नहीं दिया। उनके कार्यकर्ताओं से हमने अनुरोध किया था कि इस जिले में विनोबाजी आ गये हैं तो वे हमारे क्षेत्र की जनता के सामने अपनी बातें रखें। अगर हमारे क्षेत्र की जनता के हित में वह होगा, तो अवश्य ही स्वीकार किया जा सकता है। उस पर हम लोग स्वतंत्ररूप से विचार करेंगे। इसी महीने की ९–१० तारीख को रांची में बात-चीत हुई थी, तब तय हुआ था कि बाबा सिंह-भूम जिले में आयें। उसी क्रम में यहाँ दो-तीन दिनों से पधारे हैं। जैतगढ़ और हाटगमरिया में भी इनकी बैठक होगी। यह कोई राजनीतिक विचार नहीं है। हम लोग आज इस विषय को सुनें कि ग्रामदान का अर्थ क्या है, ग्रामस्वराज्य कैसे होगा, इसमें हमारी क्या हानि होगी और क्या लाभ होगा। किसी को कोई शंका हो तो वह भी पूछ सकते हैं। अगर आप लोगों को विश्वास हो जाय कि इस आंदोलन के द्वारा इस क्षेत्र की जनता की भलाई होगी, शोषण और जुल्म से मुक्ति मिलेगी, तो इसे स्वीकार करने में हमें किसी प्रकार की हिचकिचाहट नहीं है।

यहाँ के ९५ प्रतिशत लोग यहाँ झारखंड राज्य चाहते हैं। झारखंड-राज्य का आंदोलन और ग्रामदान-आंदोलन दोनों साथ चले, ऐसा हमने कल निवेदन किया था। उसको आप जनता के सामने आज कहें। हम चाहते हैं कि दोनों कार्यक्रम साथ-साथ चलें, इससे दोनों काम सफल होंगे।

विनोबाजी :

आप लोगों की तरफ से कुछ प्रश्न मुझे लिखकर दिये गये हैं। उनके जवाब मैं दे रहा हूँ :

***प्रश्न* : ग्रामदान होने से छोटा नागपुर टेनेंसी एक्ट के अनुसार जो अधिकार दिये हैं, क्या उन पर धक्का नहीं लगेगा ?**

उत्तर : इसका उत्तर है कि उस पर कोई धक्का नहीं लगेगा। यह पहले से तय हो गया है कि जो अधिकार आपके उस 'एक्ट' के अनुसार सुरक्षित हैं, वे सब-के-सब कायम रहेंगे।

***प्रश्न* : भूमिहीन की व्याख्या क्या है ?**

उत्तर : गाँव की जो ग्रामसभा होगी, सर्व-सम्मति से काम करनेवाली (जो लोग ग्रामदान में शामिल हैं उनकी सभा) वह जो तय करेगी, वही भूमिहीन की व्याख्या होगी। एक सीधी व्याख्या है कि जिसको कोई भूमि नहीं है वह भूमिहीन है ही। यह तो माना जायेगा। जिसको कोई खास धन्धा नहीं है, जो केवल मजदूरी पर गुजारा करता है वह भूमिहीन है, यह तय है। लेकिन ग्रामसभा यह तय कर सकती है कि जिसके पास पाव बीघा जमीन है, जिसमें कुछ होता नहीं, वह भी भूमिहीन है। बाकी कुछ लोगों के पास ५० बीघे जमीन है, २० बीघे जमीन है, तो जिनके पास अधिक जमीन है उनके पास से लेकर, जिनके पास कम जमीन है उनको, दिया जाय। यह ग्रामसभा तय कर सकती है।

***प्रश्न* : संपत्तिदान बड़े-बड़े जो धनी हैं—करोड़पति, लखपति, उनसे क्यों नहीं माँगते हैं ?**

उत्तर : पहले गाँव की शक्ति बने और उस शक्ति को लेकर बाबा उनके पास जाय, तो फायदा होगा। वह उनके पास जाकर कहेगा कि गाँव के लोगों ने तय किया है कि हर साल वे अपनी आमदनी का ४० वाँ हिस्सा ग्रामसभा को देंगे और २० वाँ हिस्सा जमीन भूमिहीनों में बाँट दिया है, और अपनी मिलकियत ग्रामसभा के नाम कर दी है। उनकी तरफ से मैं आपके पास माँगने आया हूँ। आप भी गरीबों के लिए देंगे कि नहीं ? ऐसा पूछूँगा। आप सब लोगों की ताकत लेकर जाऊँगा तो वह कबूल करेंगे, अन्यथा आज की हालत में जाऊँगा तो कहेंगे कि आप बड़े आदमी हैं। आपके लिए हमारे मन में आदर है। आप २०-२५ हजार रुपये ले जाइये। लेकिन आप लोगों की ताकत लेकर जाऊँगा, तो उनको भी वही करना होगा, जो आप कर रहे हैं। मजदूरों का हक अपने कारखानों में मान्य करना पड़ेगा। यह तो लड़ाई की 'तकनीक' है कि पहले अपनी सेना को मजबूत बनाया जाय। यह काम आपलोगों की ताकत से होनेवाला है।

***प्रश्न* : जमींदारी टूटने और सीलिंग कानून पास होने के बावजूद गरीबों को जमीनें सरकार क्यों नहीं दिला सकी ?**

उत्तर : यह तो आपको बागुन साहब से पूछना चाहिए। वह एक राजनीतिक दल के नेता हैं। आपको उनसे पूछना चाहिए कि आपकी पार्टी इस सम्बन्ध में क्या करने जा रही है। दूसरी पार्टियों के नेताओं से भी पूछना चाहिए। यह सवाल तो उनसे पूछने का है। अब इनकी पार्टी का तो यह हाल है कि कभी कांग्रेस के साथ मिल जाते हैं, और कभी विरोधी पार्टी के साथ। इनकी पार्टी में भी दो-तीन भेद हो गये हैं। एक है हुल झारखण्ड, दूसरा है झारखण्ड, और तीसरा है

विक्षुब्ध झारखण्ड। अभी राष्ट्रपति को वोट देने का हुआ तो हुल झारखण्ड ने तय किया कि वी०वी० गिरि को वोट दिया जाय, और झारखण्ड ने तय किया कि संजीव रेड्डी को वोट दिया जाय। इस तरह से भेद पड़ गये हैं।

www.vinoba.in

बाबा दान का आन्दोलन चला रहा है। सबको प्रेम से समझा रहा है। इससे बिहार में ३॥ लाख एकड़ जमीन भूदान में बँटी, जबकि सरकार के द्वारा अभी तक एक एकड़ भी नहीं बँट सकी। पार्टीवालों के द्वारा कुछ नहीं हो सका, यह आज की हालत है। आपकी आवाज अगर बुलन्द हो जाय, एक होकर आप लोग माँग करें, तो उसका कुछ वजन होगा। गाँव की जमीन गाँव के लोग आपस में बाँट लिये हैं, मिलकियत ग्रामसभा के नाम कर दी है, हर साल अपनी आमदनी का ४० वाँ हिस्सा ग्राम-कोष में देते हैं। इस तरह से करते हैं तो सरकार की जो जमीन है वह लाजिमी तौर पर ग्रामसभा को मिलेगी। अगर वह ऐसा नहीं करेगी तो सरकार टिकेगी नहीं। इसलिए यह जो आपका सवाल है वह दूसरे राजनीतिक लोगों से पूछना चाहिए कि आपने इस बारे में अब तक क्या किया? केवल वायदे किया करते हैं। बाबा की अपनी कोई पार्टी नहीं है। उसका कोई अनुशासन नहीं है। अब यह जो डा० पटनायक हैं, यह उड़ीसा के हैं। सारे भारत में घूम रहे हैं। पंजाब, उत्तर प्रदेश, राजस्थान में घूमकर यहाँ आये हैं आपके साथ काम करने के लिए। बाबा का उन पर कोई अधिकार नहीं है, केवल प्रेम के नाते यह काम कर रहे हैं। अगर कल वह कहें कि अब हम दूसरे काम में जाना चाहते हैं तो जा सकते हैं। वह कहें कि हम फिर से प्रोफेसर बनना चाहते हैं तो बन सकते हैं। उन पर मेरा कोई अंकुश नहीं है। इस वास्ते यह जो साथ काम कर रहे हैं, प्रेम के लिए। बाबा का विचार पसन्द है, मान्य है, इसलिए करते हैं।

बाबा ने न शादी की है, न परिवार बनाया है, इसलिए उसको जमीन इकट्ठी नहीं करनी है। वह तो सारे भारत में घूम रहा है २० साल से। घूमते हुए चायबासा आया और कल यहाँ से आगे के लिए रवाना होगा। यह भी सम्भव है कि चायबासा में ही भगवान उठा ले। उसको कोई दुःख नहीं होगा, आनन्दपूर्वक जायेगा। उसे कोई दुःख नहीं होगा कि पार्टी का क्या होगा, हमारे परिवार का क्या होगा! उसको कोई लगाव नहीं है। मैं यहाँ आया हूँ और फिर आगे जा रहा हूँ। आपको अगर जँचे तो काम करेंगे, नहीं जँचे तो नहीं करेंगे। भगवान जैसी बुद्धि देगा, वैसा करेंगे। आपकी कुछ नहीं चलेगी। भगवान की ही चलेगी। इस वास्ते जैसी वह बुद्धि दे, वैसा करें। मैं तो समझानेवाला हूँ। समझाने से ही पालकोट के राजा ने, पलामू के राजा ने, और कामाख्यानारायण सिंह ने लाखों एकड़ जमीन दी, जो भूमिहीनों में बाँटी गयी। मेरा तो रास्ता समझाने का ही है। राजनीतिज्ञों का रास्ता दूसरा है।

मेरे प्यारे भाइयो, बाबा आपका उद्धार करने नहीं आया है। बाबा का कहना यह नहीं है कि बाबा आपका भला करेगा। यह पार्टियों का कहना है कि हम आपको स्वर्ग ले जायेंगे यदि हमें वोट देंगे! यदि दूसरे को वोट देंगे तो वह आपको नर्क में ले जायेगा। कोई पार्टीवाला यह नहीं कहता कि भाई तुम्हारा भला-बुरा, स्वर्ग-नर्क तुम्हारे हाथ में है। बाबा यही कह रहा है कि यह तुम्हारे ही हाथ में है। बाबा यह नहीं कहता कि ग्रामदान दो तो वह आपको स्वर्ग ले जायेगा। हम इतना ही करना चाहते हैं कि गाँव की एकता बने। आज एक-एक गाँव में मुंडा, उराँव, हो, ऐसे जाति-भेद; क्रिश्चियन, नान-क्रिश्चियन ऐसे पंथ-भेद; हिन्दू-मुसलमान-ईसाई, ऐसे धर्म-भेद, और कई राजनीतिक पक्ष-भेद हैं। इस तरह से गाँव कई टुकड़ों में बँटे हुए हैं। इसलिए उनकी ताकत नहीं बनती है। गाँव की ताकत बने, उनकी अपनी एक आवाज निकले, यह बाबा चाहता है।

प्रश्न—यह काम सरकार के द्वारा कानून के माध्यम से क्यों नहीं करवा लिया जाता?

उत्तर—बाबा को राजनीति पर बिलकुल विश्वास नहीं है। २० साल से राजनीतिज्ञों का शासन चला है भारत में, लेकिन आपने क्या पाया? पहले की अपेक्षा भारत में प्रति व्यक्ति अनाज, दूध, फल, सब्जी आदि घटी, और सिनेमा, शराब, सिगरेट-बीड़ी आदि प्रति व्यक्ति बढ़ी। यह सारा पार्टी वालों ने किया। पार्टी वालों को देखें तो पायेंगे कि कांग्रेस में भी दो टुकड़े हैं। समाजवादी पक्ष में, पी० एस० पी०-एस० एस०पी० ऐसे दो टुकड़े हैं। साम्यवादियों में भी दो-तीन टुकड़े पड़ गये हैं। ऐसे अनेक सारे टुकड़े-टुकड़े करके आप चाहते हैं कि देश को मजबूत बनायेंगे, कौम को मजबूत बनायेंगे? ऐसी ही हालत अगर रही और देश में दंगे-फसाद होने लगे, तो बाहर से चीन और पाकिस्तान का हमला हो जायेगा। फिर यह सारा जो चल रहा है, खतम हो जायेगा। यह संकट भारत पर खड़ा है। मैं वह स्थान भी देख आया हूँ, जहाँ पर आक्रमण होने का संभव है। इसकी पूरी तयारी हो गयी है। बाबा की यात्रा पाकिस्तान में भी चली है। वहाँ का सारा मामला बाबा ने देख लिया है। भारत के अन्दर मामला जरा बिगड़े कि तुरन्त हमला हो, ऐसी तैयारी हो गयी है। उसका एक ही उत्तर है कि गाँव-गाँव मजबूत बन जायँ, लोग अपना कारोबार ग्रामसभा के माध्यम से खुद संभालें। ऐसा अगर हो जाय तो जो भी सरकार बनेगी वह मजबूत होगी, नहीं तो जो भी सरकार बनेगी वह कमजोर होगी। गाँव-गाँव खुशहाल होंगे, तो सरकार की ताकत बढ़ेगी अन्यथा वह कमजोर रहेगी। बाहर के शत्रुओं का मुकाबला करना उसके लिए कठिन होगा। यह थोड़े में मैंने आपके सामने बात रखी।

दूसरी बात, बागुन साहब से कहनी है। वे झारखण्ड पार्टी के अध्यक्ष हैं। मैं उड़ीसा जा रहा हूँ मयूरभंज जिले में। वहाँ पर लोग काम कर रहे हैं। आदिवादी लोग हैं और दूसरे लोग भी काम कर रहे हैं। मैं ३१ तारीख को वहाँ पहुँच रहा हूँ। मुझे वह पूरा-का-पूरा जिला ग्रामदान में दे रहे हैं। मेरी समझ में नहीं आता कि वह भी आदिवासी, जिला और आप भी आदिवासी हैं। तो क्या मैं आपका नुकसान करने के लिए निकला हूँ? उससे मुझे लाभ क्या होगा, यह सोचने की बात है। थोड़ी श्रद्धा भी रखनी होगी। मयूरभंज जिला हो जायेगा और फिर खूँटी अनुमंडल राँची का हो जायेगा। इसमें आपका

क्यों बिगड़ेगा ? इस वास्ते आप सब लोग जुट करके काम में लग जायं।

www.vinoba.in

आपकी (बागुन सुम्बरुई की) उम्र ४५ साल है, और मेरी ७५ साल की पूरी हो रही है। आपकी और मेरी उम्र में ३० साल का अन्तर है। अब बाबा घूमता रहे और आप न घूमें, यह कहाँ तक उचित है ? गाँव-गाँव में जाइये, उनको बाबा का विचार अपनी भाषा में समझाइये। इससे बहुत काम होगा। सारा जिला १५ दिन में ग्रामदान में आ सकता है।

इन लोगों ने कहा कि आप झारखण्ड प्रान्त के लिए अपना समर्थन दें। यदि आप इसे प्रेम से और अहिंसा से प्राप्त करना चाहते हैं तो बाबा का इसके लिए आशीर्वाद है। यह भी कहा कि झारखण्ड प्रान्त अगर हिंसा से लेना चाहेंगे तो वह नहीं हो सकेगा। लेकिन प्रेम से समझा-बुझाकर लेना चाहते हैं, तो बाबा का पूरा आशीर्वाद है। बाबा का वजन भारत पर कुछ-न-कुछ है। बाबा को इस बात को समझाने के लिए आप आये नहीं, और तीन महीने के बाद मिले। यदि पहले ही बाबा की सहानुभूति प्राप्त कर लेते तो उसका लाभ मिलता। अगर झारखण्ड बनाना चाहते हैं तो उसके लिए बाबा का आशीर्वाद है। लेकिन सोचना होगा कि उसके लिए गाँव-गाँव जाना पड़ेगा, राजनीतिज्ञों को अनुकूल करना पड़ेगा, यहाँ की पार्टीवालों को अनुकूल करना पड़ेगा, चारों प्रान्तों—म० प्र०, उड़ीसा, बिहार और बंगाल—के लोगों को अनुकूल करना पड़ेगा। क्योंकि इन चारों प्रान्तों के कुछ हिस्सों को मिलाकर आप झारखण्ड राज्य बनाना चाहते हैं। मैंने पूछा, 'यह कितने दिनों में होगा ?' तो बताया कि दो साल तो लग ही जायेंगे। मैंने कहा कि झारखण्ड प्रान्त के लिए दो साल लगेंगे, लेकिन यह ग्रामदान का काम तो १५ दिन में ही पूरा हो सकता है यदि आप सब काम में लग जायँ। इसी में बुद्धिमानी है कि जो काम पहले पूरा होनेवाला है उसे पहले पूरा किया जाय, फिर दूसरे काम में लगें। तो उन्होंने कबूल कर लिया। अब उनका और मेरा 'फ्रंट' एक हो गया। इस वास्ते आप सबलोग बे-खटके ग्रामदान में शामिल हो जायँ। •

चायबासा (सिंहभूम, २१ अगस्त '६९)

क्रान्ति के नये सन्दर्भ में मार्ग-खोजन की प्रक्रिया

— धीरेन्द्र मजूमदार —

[अपनी जीवन-योजना के अनुसार श्री धीरेन्द्र भाई ने सन् १९६० में, जब कि उन्होंने अपने जीवन के साठ साल पूरे किये, अपनी सभी सक्रिय संस्थागत जिम्मेदारियों से मुक्ति ले ली, और 'वानप्रस्थी' की जगह 'जनप्रस्थी' बने। जनक्रान्ति' के लिए जनशक्ति की खोज में एक सामान्य 'जन' बनकर 'जन' के बीच जा बैठे। तब से ही उनकी 'जनप्रस्थी' साधना चल रही है। उस साधना के अनुभव वे बराबर पत्र-रूप में श्री सिद्धराज ढड्ढा को लिखते रहे हैं। प्रस्तुत हैं उनके अद्यतन पत्र का एक अंश, जिसमें उन्होंने सर्वोदय-क्रान्ति की मौलिकता का विवेचन करते हुए मार्ग-खोजन की बात कही है। —सं०]

सम्बन्धों की क्रान्ति

सर्वोदय की क्रान्ति सम्बन्ध की क्रान्ति है, न कि समृद्धि की। भूमिहीन गरीब हैं, उनको जमीन मिलनी चाहिए, वह सरकारी लेवी से भी हो सकता है। उससे गरीबों की गरीबी घट सकती है, लेकिन गरीब-अमीर का सम्बन्ध नहीं बन सकता है। सम्बन्ध बना नहीं और येन-केन-प्रकारेण गरीबों के हाथ में जमीन आ गयी तो उसके खिलाफ उलटी बात भी हो सकती है। कोई दूसरी सरकार आकर यह कह सकती है कि राष्ट्रहित में अलाभकर भूमिस्वामित्व समाप्त होना चाहिए। और वे थोड़ी जमीनवालों की जमीन दूसरों को दे सकते हैं। अगर सम्बन्ध का निर्माण होता है तो गरीब-अमीर परस्पर सहकार की प्रक्रिया में आ जाते हैं; जिसका स्वाभाविक फलित विषमता निराकरण में ही होगा।

मानवीय सम्बन्ध प्रथम पुरुष तथा द्वितीय पुरुष के बीच में ही हो सकता है। अन्य पुरुष के मार्फत यह सम्बन्ध नहीं बन सकता है। मैं देनेवाला हूँ, वह लेनेवाला है, ऐसी स्थिति में ही 'मेरे' और 'तेरे' के बीच में सम्बन्ध हो सकता है। देनेवाला लेनेवाले को जानता नहीं और पानेवाला देनेवाले को नहीं जानता है, ऐसे लेन-देन कौटुम्बिक नहीं होते हैं, बाजारू होते हैं, और जहाँ बाजार आया, वहाँ सम्बन्ध टूटा और सौदा आया। कार्यकर्ता का सम्बन्ध दाता और आदाता किसी के साथ नहीं होता है तो किसी के तकलीफ और सुख की फिक्र न होना सामान्य नियम है। फिर जब वह कार्यकर्ता स्वतंत्र व्यक्ति न होकर किसी केन्द्रीय संस्था का पुर्जा हो, तब यह स्थिति और अधिक निर्मम होती है। अगर कोई व्यक्ति बिना सम्बन्ध के भी दाता और आदाता के दिलों को जोड़ने की फिक्र करता है, तो वह 'विशिष्ट-चरित्र' का मनुष्य है ऐसा समझना चाहिए।

वस्तुतः अगर हम चाहते हैं कि हमारा आन्दोलन लोकशक्ति के अधिष्ठान का माध्यम हो और इस क्रान्ति का वाहन भी स्वतंत्र लोकशक्ति बने, तब हमको तंत्रमुक्ति और निधिमुक्ति का मार्ग निकालना ही पड़ेगा। यही कारण है कि जब पिछले साल श्री विनोबाजी ने मुझसे मार्गदर्शन की बात कही थी, तो मैंने उनसे कहा था कि आज का प्रश्न मार्गदर्शन का नहीं, मार्ग-खोजन का है।

जब विनोबा इस आन्दोलन की पद्धति के लिए तंत्रमुक्ति तथा निधिमुक्ति का विचार रख रहे हैं, और हम भी उसके मार्ग खोजने की आवश्यकता महसूस कर रहे हैं, तो हमको मौजूदा निधियुक्त तथा तंत्रबद्ध संस्थाओं की जन्म-कुण्डली तथा उसके इतिहास पर एक नजर डालने की जरूरत है।

गांधीजी और कांग्रेस

भारत की आजादी के लिए कांग्रेस ने गांधीजी के नेतृत्व को स्वीकार किया था। इसलिए नहीं कि वे लोग गांधीजी के विचार तथा पद्धति को मानते गये थे, बल्कि इसलिए कि वे समझते थे कि उन दिनों एकमात्र गांधीजी ही ऐसे व्यक्ति हैं, जो जनता को उभाड़ सकते हैं। उनके सामने अंग्रेजों से मुकाबिला करने का कोई दूसरा मार्ग नहीं था। तब अगर राष्ट्रीय भारत को परिस्थिति-वश ही सही, गांधीजी के नेतृत्व को स्वीकार करना था तो उन्हें गांधीजी के कार्यक्रम को भी अपनाना जरूरी था। इस पृष्ठभूमि में स्वतंत्रता-संग्राम की कोख में से गांधीजी के

रचनात्मक कार्यों तथा संस्थाओं का जन्म हुआ। उन दिनों हम कार्यकर्ताओं ने भी स्वराज्य-प्राप्ति के लिए रचनात्मक कार्य एक ठोस बुनियाद है, ऐसा माना था; अर्थात् ये रचनात्मक संस्थाएँ राष्ट्रवाद की औलाद हैं, न कि गांधीजी द्वारा परिकल्पित समाज-परिवर्तन की क्रान्ति के वाहक !

देश आजाद हुआ, अर्थात् राष्ट्रवाद की विजय हुई। इस भूमिका में स्वाभाविक ही रचनात्मक संस्थाओं और कार्यकर्ताओं का दृष्टिकोण नव स्वतंत्र राष्ट्र के आर्थिक तथा सांस्कृतिक विकास तक सीमित रहा, किसी नयी क्रान्ति के लिए कोई अभिक्रम नहीं जगा।

सन् १९४८ में जब मैंने चर्खा संघ की अध्यक्षता की जिम्मेदारी संभाली थी तो एक बार देशभर में तूफानी दौरा करके गांधीजी द्वारा परिकल्पित राजनीतिक तथा सामाजिक क्रान्ति की बात समझाने की कोशिश की थी। उस समय कुछ थोड़े से मित्रों को छोड़कर आमतौर से रचनात्मक संस्थाओं के नेताओं और कार्यकर्ताओं को वह अच्छा नहीं लगा था। बल्कि कुछ प्रदेशों के मित्रों ने मुझको 'प्रच्छन्न-कम्यूनिस्ट' की संज्ञा दे दी थी। शायद उन दिनों लोग यही मानते थे कि क्रान्ति की बात करनेवाले सब कम्यूनिस्ट ही हुआ करते हैं। जब तक विनोबा ने सर्वोदय की नयी क्रान्ति का बिगुल नहीं बजाया था तब तक देश ने यह नहीं समझा था कि क्रान्ति के लिए साम्यवाद के विचार से बढ़कर भी कुछ अगला कदम हो सकता है। वे शायद भूलते थे कि मार्क्स के विचार के प्रतिपादन के बाद दुनिया सौ वर्ष आगे बढ़ गयी है, और इस विज्ञान के युग में सौ वर्ष की अवधि बहुत लम्बी होती है।

क्रान्ति और संस्था

लेकिन गांधीजी द्वारा संस्थापित रचनात्मक संस्थाओं के कार्यकर्ताओं की निष्ठा उनके व्यक्तित्व के प्रति थी। और वे मानते थे कि गांधी-विचार को आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी उनकी ही है। यही कारण है कि जब विनोबाजी ने भूदान-यज्ञ का आन्दोलन छेड़ा तो उनको मुख्य रूप से इन्हीं संस्थाओं की मदद मिली। मैंने 'मदद मिली' शब्द का जानबूझकर इस्तेमाल किया है। वस्तुतः इन संस्थाओं ने अपने को क्रान्ति का वाहक नहीं माना और न आज तक क्रान्ति उनका मुख्य कार्यक्रम ही बनी। अपने राष्ट्रवादी स्वभाव और स्वधर्म के कारण उनका मुख्य धंधा बेकारों को रोजी देना, गरीबों की सेवा करना, शिक्षण की प्रवृत्ति चलाना आदि राष्ट्रीय विकास की प्रवृत्तियों तक ही रहा है। ग्रामदान और ग्रामस्वराज्य का आन्दोलन बावजूद सारी सहानुभूति के उनके लिए 'साइड बिजनेस' ही बना हुआ है।

जब हम लोकशक्ति द्वारा लोकतांत्रिक क्रान्ति करना चाहते हैं तो हमें नये साधनों पर विचार करना होगा। पुराने जमाने में जब मनुष्य का विकास निम्न स्तर पर था तो समाज की प्रगति कुछ विशिष्ट शक्तियों तथा प्रतिभाशाली व्यक्तियों के सहारे चलती थी। यानी उस समय व्यक्तिवादी समाज था। उन दिनों समाज की प्रगति राजा और गुरु के माध्यम से होती थी। जनता भी मानती थी कि उसकी प्रगति की जिम्मेदारी उन्हीं की है। इसलिए समाज में उनका आदेश चलता था।

बाद में जब ज्ञान-विज्ञान का विकास हुआ, सार्वजनिक चेतना की वृद्धि हुई तो व्यक्तिवाद के स्थान पर संस्थावाद आया। इस प्रकार इन्सान प्रगति की दिशा में एक कदम आगे बढ़ा। व्यक्तिवाद ने मनुष्य समाज को आगे जरूर बढ़ाया था, लेकिन उस पद्धति में से व्यक्तियों की निरंकुशता का विकास भी हुआ, जिसे इन्सान की बढ़ती हुई चेतना स्वीकार नहीं कर सकती थी। संस्थावाद में उस प्रकार आत्यन्तिक निरंकुशता नहीं टिक पायी। क्योंकि संस्थाओं को एक 'टीम' के सामूहिक नेतृत्व से चलाना पड़ता है। व्यक्तिवाद से संस्थावाद में चिन्तन और जिम्मेदारी छोटे दायरे से निकलकर बड़े दायरे में पहुँच गयी। लेकिन उस कारण लोकशक्ति का विकास हुआ, ऐसा नहीं समझना चाहिए।

लोककल्याणकारी राज्यवाद

सनातन काल से 'लोक' ने यही माना है कि उनकी भलाई और विकास की फिक्र उनको नहीं करनी है किसी दूसरे को करनी है; वह दूसरा राजा हो, पुरोहित हो या गुरु हो। जनता को केवल इतना ही करना है कि वे उनके प्रति वफादार रहें और उन्हें कर दें, श्रद्धा-भक्ति दें या दक्षिणा दें। संस्थावाद में इतना ही हुआ कि जनता के लिए सोचनेवाली एजेन्सी का आकार बढ़ा; व्यक्ति के स्थान पर संस्था जरूर आयी, लेकिन प्रजा जहाँ थी वहीं रही, यानी उसे अपने सुख और शान्ति के लिए, अपने विकास और प्रगति के लिए व्यक्तिगत ठीकेदार के स्थान पर संस्थागत ठीकेदार मिल गये। संस्थावाद में अधिक लोगों के साथ मिलकर जिम्मेदारी उठाने की जो परिपाटी बनी, उससे जिम्मेदारों का दायरा व्यापक तो हुआ, लेकिन हानि यह हुई कि सोचनेवाला प्रजा से अलग हो गया। व्यक्ति चेतन होता है और संस्था जड़। राजा-प्रजा, पुरोहित-यजमान और गुरु-शिष्य में हार्दिक और मानवीय सम्बन्ध होता था, जिस कारण समाज में एक आध्यात्मिक संस्कृति का निर्माण होता था। संस्थावाद में वह सम्बन्ध समाप्त हुआ। लोक-संचालन, लोक-कल्याण तथा लोक-शिक्षण एक 'रूटीन-बद्ध' जड़ प्रवृत्ति मात्र रह गयी। जिस कारण समाज में आध्यात्मिक मूल्यों का ह्रास हो गया।

फिर भी संस्थाओं ने अपनी ताकत से लोककल्याण-कार्य का काफी विकास किया है। और शायद दुनिया अगर एक ही ढंग से चलती रहती तो आगे भी यह क्रम चलता। लेकिन अब दुनिया की परिस्थिति और इन्सान की मनःस्थिति में इतना अधिक परिवर्तन हो चुका है कि अब संस्थाओं के सहारे न तो विकास का काम हो सकता है और न आवश्यकता पड़ने पर क्रान्ति ही।

शुरू-शुरूमें जब सेवा, शिक्षण आदि की संस्थाओं को सीधे जनता के सहारे जीना पड़ता था, तब संस्था के लोगों के लिए अनिवार्य होता था कि वे संस्था में रहते हुए भी जनता से कुछ व्यक्तिगत सम्पर्क करें। लेकिन जबसे दुनिया में कल्याणकारी राज्यवाद का विचार आया है, और संस्थाएँ उसी के सहारे चलने लगी हैं, तब से संस्था-सेवकों को अपने पोषण के लिए जनता से सम्पर्क करने की आवश्यकता नहीं रही। अगर संस्था-संचालन के लिए जनता से कुछ धन-संग्रह किया भी जाता है, तो उसका

विनियोग मुख्य संचालकों द्वारा ही होता है, और संग्रह का क्षेत्र व्यापक होता है, जिससे स्थानीय सेवकों को स्थानीय जनता से सम्पर्क का कोई अवसर नहीं मिल पाता। ऐसे छोटे-छोटे अनेक कारणों से संस्था-सेवकों को आम लोगों से कोई सरोकार ही नहीं रह गया है।

लेकिन अगर संस्थावाद से समाजवाद तक पहुँचने के लिए सन्धिकाल में कुछ संस्थाओं की जरूरत पड़े भी, तो उनके स्वरूप में आमूल परिवर्तन करना होगा ताकि संस्था की प्रगति ही उसके विघटन की प्रक्रिया हो।

जनता की नयी मनःस्थिति

आज जनता की मनःस्थिति में भी आमूल परिवर्तन हो गया है। इस युग की मुख्य उपलब्धि विज्ञान और लोकतंत्र है। विज्ञान ने प्रकृति के रहस्यों का इतनी बारीकी से उद्घाटन किया है कि आज जनमानस में अन्धविश्वास की गुंजाइश नहीं रही है। इस कारण जनता किसी मनुष्य या संस्था का अन्धानुसरण नहीं कर सकती है। सार्वजनिक चेतना के कारण जनता में उनके गुण-दोष के विश्लेषण की शक्ति पैदा हो गयी है। तो सामान्य रुचि के अनुसार वह दोषों से अधिक प्रभावित भी होती है। इस तरह एक ओर संस्था और कार्यकर्ताओं में प्रत्यक्ष मानवीय सम्बन्ध के अभाव में उनमें प्रेरणा की शक्ति घट गयी है और दूसरी ओर जनता द्वारा गुण-दोषों की पहचान के कारण उनके अन्दर की भक्ति हट गयी है, इसलिए अब परम्परागत संस्थामूलक पद्धति से क्रान्ति की प्रेरणा का निर्माण नहीं किया जा सकता। यह विनोबा की तपस्या और जमाने की आवश्यकता ही है, जिसने इन्हीं संस्थाओं और कार्यकर्ताओं के मार्फत युग की चुनौती के उत्तर में ग्रामदान का 'शंखनाद' करा लिया है। मैंने 'शंखनाद' शब्द इसलिए इस्तेमाल किया है क्योंकि मैं मानता हूँ कि अभी तक हमारे आन्दोलन की निष्पत्ति इतनी ही हुई है कि ग्रामदानी गाँवों के लोगों ने इतना कह दिया है कि उन्होंने हमारा सन्देश सुन लिया है। और देश-विदेश के लोगों को भी ग्रामदान शब्द की जानकारी हो गयी है। हमारे आज तक के प्रयास से ग्रामदान की ध्वनि सबके कान में पहुँच गयी है, और कुछ लोगों के मन में भी इसके लिए जिज्ञासा पैदा हो गयी है। यह जो जिज्ञासा है, यही क्रान्ति के मैदान में प्रवेश के लिए एक फाटक है, ऐसा समझना चाहिए।

क्रान्ति का 'जामन'

इस फाटक से क्रान्ति का मार्ग पकड़ने के लिए स्वतंत्र लोकशक्ति की आवश्यकता है, जिसका निर्माण शंख फूंकनेवाले माध्यमों से नहीं हो सकेगा। उसका निर्माण तभी हो सकेगा जब क्रान्तिनिष्ठ तथा शक्तिशाली कार्यकर्ता लोगों के बीच में 'जामन' बनकर जा बैठेंगे। जिसके लिए गांधीजी ने आखिरी दिनों में देश के नौजवानों का आह्वान किया था। इस जामन का काम कौन करेगा? उसकी पहल उन्हीं को करनी होगी, जिसे लोग ऊपर का कार्यकर्ता कहते हैं, और आज जो संस्था-संचालन के 'रूटीन' में लगे हुए हैं। संस्था-संचालन का भार हिम्मत और विश्वास के साथ कनिष्ठ कार्यकर्ताओं के हाथों में सौंपकर निकलना होगा। इसका मतलब यह नहीं है कि देश में व्यापक अभियान का काम बन्द हो। वह तो चलता ही रहेगा और जयप्रकाश बाबू सहित हम सबको निरन्तर घूमते रहना होगा। लेकिन अपनी व्यूह-रचना में कुछ ही लोगों को, जिनके व्यक्तित्व की सार्वजनिक प्रतिष्ठा है, इस काम के लिए छोड़कर बाकी सबको 'बेस' में बैठना होगा। •

प्रादेशिक पत्र

पंजाब में प्रदेशदान का संकल्प और जिलादान की तैयारी

'मैं बूढ़ा नहीं हूँ, मेरी उम्र बूढ़ी है'— डा० रामरख्खा धीर प्रान्तदान के संदर्भ में बोल रहे थे। डाक्टर साहब की ७०-७५ साल की उम्र है। लेकिन वे मन से युवा हैं। पंजाब हरिजन सेवक संघ तथा पंजाब नशाबन्दी कौन्सिल के वे अध्यक्ष हैं। परन्तु ग्रामदान हुए बिना कोई काम आगे बढ़नेवाला नहीं है, यह उनका पक्का विश्वास बन गया है। अतः ग्रामदान आन्दोलन के काम में अपनी पूरी शक्ति वे लगा रहे हैं।

पंजाब सर्वोदय मण्डल की बैठक थी। पर समझ में नहीं आ रहा था कि यह रचनात्मक संस्था-संचालकों की बैठक है या सर्वोदय मण्डल की। क्योंकि अपवादस्वरूप एक-दो कार्यकर्ताओं को छोड़कर सब-के-सब किसी-न-किसी रचनात्मक संस्था का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। महाराष्ट्र से आनेवाली मेरी सरीखी के लिए यह सारा नया ही था। ऐसा लग रहा था, मानो विनोबाजी की इच्छा के मुताबिक यहाँ की सब रचनात्मक संस्थाएँ ग्रामदानाभिमुख बन गयी हैं।

भाई यशपाल मित्तल के कहने से इस बात की पुष्टि हुई। यशपाल जी सुना रहे थे—'कपूरथला जिले में पदयात्राएँ आयोजित करनी थीं। उसके लिए पंजाब खादी ग्रामोद्योग संघ के मंत्री श्री उदयचन्दजी पंडित से कुछ कार्यकर्ताओं की माँग की गयी। पंडितजी ने अपने सारे ३००-४०० कार्यकर्ताओं की सूची मुझे दे दी और कहा कि इनमें से जितने चाहो उतने कार्यकर्ता चुन लो। मैंने सोच-विचार कर सौ कार्यकर्ताओं के नाम पंडितजी को दिये। रत्ती भर भी फेरफार किये बिना पंडितजी ने उन सब कार्यकर्ताओं को पदयात्राओं में भेज दिया। इतना ही नहीं उन सब कार्यकर्ताओं का सारा प्रवास, भोजन, व अन्य खर्च उनकी संस्था ने दिया।' इस तरह खादी कार्यकर्ता पंजाब में ग्रामदान आन्दोलन की बहुत बड़ी शक्ति हैं। पूर्व तैयारी से लेकर प्राप्ति तक के सब कामों में वे जिम्मेदारी के साथ हाथ बँटाते हैं। अनोखा व प्रेरक दृश्य है यह!

फगवाड़े (कपूरथला) में ९ अगस्त के पवित्र दिन सर्व सेवा संघ के मंत्री श्री ठाकुर दास बंग के मार्गदर्शन में पंजाब सर्वोदय-मण्डल की बैठक हुई। इसमें श्री उजागर सिंहजी बिलगा अध्यक्ष तथा श्री बनारसीदास गोयल मंत्री सर्व सम्मति से चुने गये।

वर्षा के दिन होने के कारण कपूरथला जिले में जो पदयात्राएँ हुईं उन्हें बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। जगह-जगह बाढ़ ने टोलियों को घेर लिया था। फिर भी १०४ ग्रामदान मिले। करीब आधा जिलादान हो गया है। अतः कार्यकर्ताओं का उत्साह बढ़ा है और ५ से ८ सितम्बर तक श्री जयप्रकाश जी का पंजाब से जब दौरा होगा तबतक संपूर्ण कपूरथला जिलादान करने का तय किया गया। उसी तरह ३० जनवरी १९७१ तक प्रदेशदान करने का भी निर्णय हुआ। उसकी बाकायदा घोषणा जयप्रकाशजी के सामने करने का सोचा गया है।

पंजाब प्रान्त की धरती सुजलाम् सुफलाम् है। नहरों के कारण 'हरित क्रान्ति' हो रही है। छोटे-मोटे विविध उद्योग होने के कारण अन्य प्रदेशों की तरह यहाँ बेकारी की समस्या उतनी उग्र नहीं है। चरखा खूब चलता है। ऐसे प्रान्त ने "प्रदेशदान" का संकल्प करने का सोचा है, यह बहुत खुशी की बात है। जालंधर जिले के हर घर से करीब एक आदमी व्यापार के लिए इंग्लैंड गया हुआ है। अतः वहाँ से खूब पैसा इस जिले में हर साल आता है। जालंधर के श्री बनारसीदासजी कह रहे थे कि करीब एक लाख रुपया हर माह मेरे गाँव में इंग्लैंड से आता है। बम्बई से जैसे रत्नागिरी में पैसा जाता है।

पंजाब सर्वोदय मण्डल के अध्यक्ष श्री उजागर सिंह बिल्गा बहुत पुराने क्रान्तिकारी हैं। स्व० भगतसिंह के आप साथी रह चुके हैं, प्रान्तीय कांग्रेस समाजवादी पक्ष के आप संगठक कई साल रह चुके हैं। अतः श्री जयप्रकाशजी से आपका काफी घनिष्ठ सम्बन्ध है। उम्र साठ के लगभग है पर जोश नवजवानों को शरमाता है। यद्यपि पंजाब और हरियाणा के अलग-अलग सर्वोदय मण्डल हैं फिर भी भाई उजागर सिंहजी की तथा यशपाल मित्तल की कार्यकुशलता के कारण दोनों में बहुत मीठे और सहकार के सम्बन्ध हैं। हरियाणा प्रदेश सर्वोदय मण्डल के अध्यक्ष प्रो० शादीराम जोशी भी उपस्थित थे।

पंजाब बहुत जागृत प्रदेश है। यहाँ पंजाबी, उर्दू और हिन्दी भाषाएँ चलती हैं। तीनों की अलग-अलग तीन लिपियाँ हैं। मतलब, यहाँ के बच्चे बचपन से ही चार भाषाएँ—पंजाबी, उर्दू, हिन्दी और अंग्रेजी; और चार लिपियाँ—गुरूमुखी, उर्दू, नागरी, रोमन—सहजता से सीख लेते हैं। प्रदेश जागृत है और विचार-प्रधान हमारा आन्दोलन है। पर पंजाबी भाषा (जो सबसे ज्यादा यहाँ चलती है) में कोई अच्छा साहित्य यहाँ नहीं है। इस कमी की पूर्ति करने का निश्चय पंजाब सर्वोदय मण्डल ने इस बार किया है। जिला सर्वोदय मण्डलों की शक्ति यहाँ अब धीरे-धीरे बनेगी, ऐसा दिखाई देता है। कम्यूनिस्ट, नक्सालवादी आदि वामपंथियों का जोर भी यहाँ धीरे-धीरे बढ़ रहा है। बढ़ती संपत्ति का वितरण ठीक से न होने के कारण उनका प्रभाव बढ़ेगा अगर हम लोग तेजी से काम नहीं करेंगे तो।

फगवाड़े के खादी भण्डार में यह बैठक हो रही थी। खादी के थानों से कमरा खचाखच भरा हुआ था। खादी की बिक्री दिन-ब-दिन घटती जा रही है, यह शिकायत है। ९ से १६ अक्तूबर तक खादी-सप्ताह मनाकर उस समय ज्यादा-से-ज्यादा खादी बेचने का निर्णय पंजाब सर्वोदय मण्डल ने किया है। पंजाब में खादी का काम बहुत आगे बढ़ा हुआ है। लाखों कत्तिनों का गुजारा खादी करती है। मेहनत करके स्वाभिमान की जिन्दगी बसर करना वे चाहती हैं। पर क्या इस स्वतंत्र भारत में यह संभव हो पा रहा है?

कपूरथला जिले में ४०० गाँव हैं। उनमें से २०० गाँव ग्रामदान हो चुके हैं। श्री जयप्रकाशजी को दो लाख रुपये की थैली तथा कपूरथला जिलादान भेंट किया जायगा।

पंजाब में घूमते समय एक बड़ा दुखद दर्शन होता है। कई जिले हैं जहाँ अब एक भी मुसलमान नहीं बचा है। या तो मारे गये या पाकिस्तान भाग गये।

श्री जयप्रकाशजी के दौरे की पूर्व तैयारी के तौर पर जालंधर, अमृतसर और लुधियाना शहर के नागरिकों की सभाएँ हुईं। सर्वोदय का विचार लोगों को बहुत आकर्षक मालूम होता है।

कपूरथला जिलादान की तैयारी के लिए नडाला विकासखण्ड के सारे प्राथमिक शिक्षकों की तथा विकास अधिकारी व पंच-सरपंचों की अलग-अलग सभाएँ हुईं। अपने-अपने विकासखंड का दान करने के काम में सबने सहयोग देने का आश्वासन दिया।

—सुमन बंग

'लाटरी' बन्द हो

तरुण शान्ति-सेना के तरुणों की यह सभा, जो हिरोशिमा दिवस व 'लाटरी-विरोध-दिवस' के रूप में आयोजित की गयी, इस अवसर पर प्रस्ताव करती है कि राज्य सरकारों द्वारा, और खास कर मध्यप्रदेश सरकार द्वारा, आरम्भ की गई लाटरी की कुप्रथा एक निन्दनीय विषय है।

राज्य सरकारों की लाटरी द्वारा धनोपार्जन-वृत्ति ही दूषित है। यह और भी आश्चर्य का विषय है कि मध्यप्रदेश शासन ने गांधी-वर्ष में एक ऐसे कार्य को आरम्भ किया है, जो बापू के आदर्श के हनन की दिशा में एक कदम है। महात्मा गांधी साध्य-साधन की पवित्रता पर जोर देते थे। अच्छे-से-अच्छे साध्य के लिए बुरे साधनों को अपनाना उन्हें बरदाश्त नहीं था। गांधी-वर्ष में उन बापू के नाम पर, जिन्हें हम राष्ट्रपिता कहने का दम भरते हैं, उनकी आत्मा को हम यदि सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित नहीं करना चाहते हैं, तो कम-से-कम हम उनकी आत्मा को दुःखी तो न करें! अस्तु;

यह सभा राज्य सरकारों से विशेष कर मध्यप्रदेश सरकार से अनुरोध करती है कि वह गांधी-वर्ष में लाटरी-प्रथा को सदा के लिए समाप्त कर दे।

(३ अगस्त '६९ को छतरपुर तरुण शान्ति-सैनिकों की सभा में पारित)

www.vinoba.in

भारत का हर नागरिक खान अब्दुल गफ्फार खान का हार्दिक स्वागत कर अपने राष्ट्रीय कर्त्तव्य का पालन करे

यह सर्वविदित ही है कि खान अब्दुल गफ्फार खान, जिन्हें श्रद्धावश बादशाह खान के नाम से जाना जाता है, खान अब्दुल गफ्फार खान सालगिरह-समिति तथा भारतीय सांस्कृतिक सम्पर्क परिषद् के आमंत्रण पर भारत पधार रहे हैं।

भारतीय स्वातंत्र्य-संग्राम में बादशाह खान महान सेनानियों में से एक थे। वे इतने अधिक विख्यात थे कि गांधीजी के जीवन-काल में ही उन्हें 'द्वितीय गांधी' के नाम से जाना जाता था। आज भी इस देश की जनता उनका स्मरण श्रद्धा, प्रशंसा और कृतज्ञता से अभिभूत होकर करती है तथा आनेवाली पीढ़ियाँ भी उन्हें इसी प्रकार सम्मान देती रहेंगी। उनके आगमन से हमारे देश में सेवा, त्याग तथा मानवीय भाई-चारे की भावना, जिसका इतना अधिक ह्रास हो गया है, को पुनर्जीवन प्राप्त होगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

बादशाह खान दिल्ली में आगामी २८ सितम्बर को आनेवाले हैं तथा कस्तूरबा गांधी की पुण्यतिथि २२ फरवरी १९७० तक ठहरेंगे। इस अवधि में वे भारत के अनेक स्थलों का भ्रमण करेंगे, विशेष करके साबरमती तथा सेवाग्राम जायेंगे। सालगिरह-समिति उनसे सम्पर्क करके विस्तृत कार्यक्रम तैयार कर रही है।

इस देश के लोग अपने महापुरुषों को सम्मान देने के लिए जिन रीतियों के अभ्यस्त हैं, उनमें से एक है, श्रद्धा और सम्मान के लिए थैली भेंट करना। इसी परम्परा का अनुगमन करते हुए सालगिरह-समिति ने यह निर्णय लिया है कि बादशाह खान को वे जितने वर्ष के हो गये हैं उतने लाख रुपये की थैली भेंट की जाय। बादशाह खान शीघ्र ही ८० वर्ष की आयु के हो जायेंगे और इसलिए ८० लाख रुपये की निधि एतदर्थ एकत्र की जानी है। सम्पूर्ण निधि की एक थैली किसी एक स्थान पर भेंट नहीं की जानी है, अपितु वे देश के विभिन्न स्थलों पर जब पधारेंगे, स्थल-विशेष पर स्थानीय रूप से एकत्रित धनराशि उन्हें भेंट की जा सकती है।

अस्सी लाख की धनराशि बहुत बड़ी धनराशि लगती है, परन्तु यदि संपूर्ण जनसंख्या पर हिसाब लगाया जाय, तो केवल दो पैसे प्रति व्यक्ति आता है। इसलिए सालगिरह-समिति के अध्यक्ष के रूप में भारतीय जनता से यह अपील करना चाहता हूँ कि वह खान अब्दुल गफ्फार खान निधि में यथाशक्ति अधिकतम योगदान करे। कई राज्यों में व्यापक तौर पर राज्य स्वागत-समितियों का गठन पहले ही किया जा चुका है। जहाँ ऐसा नहीं हुआ है, वहाँ के लोगों का यह अनिवार्य कर्तव्य है कि वे भी इसी प्रकार इस कार्य में आगे आयें और राज्य-समितियों को अपने-अपने राज्य में सभी क्षेत्रों के लिए निधि एकत्रण संगठन खड़ा करना चाहिए।

सभी प्रकार के सार्वजनिक संगठन, राजनीतिक दल, ट्रेड यूनियन, व्यापारिक संघ, विद्यार्थी संघ, शिक्षक-संघ, सामाजिक संगठन और अन्य संगठनों को इस अभियान में अनिवार्यतः भाग लेना चाहिए। औद्योगिक कामगारों से चन्दा एकत्र करने में सुविधा के लिए ट्रेड यूनियनों को चाहिए कि वे प्रस्ताव पारित करके प्रबन्धक-मंडल को यह अधिकार दे दें कि वह कामगारों के वेतन से उनके द्वारा सांकेतिक चन्दे की राशि वेतन-मजदूरी भुगतान अधिनियम के अन्तर्गत काट लें। विद्यार्थी तथा अन्य स्वयंसेवक-गण छोटी धनराशि के कूपन व्यापक तौर पर बेच सकते हैं। उपयुक्त प्रकार के बिल्ले बनाकर यथासंभव अधिक-से-अधिक संख्या में बेचे जा सकते हैं। चन्दा-अभियान में तेजी लाने तथा व्यापक प्रचार-प्रसार के लिए चन्दा-दिवस और चन्दा-सप्ताह का भी आयोजन किया जा सकता है।

इस निधि के लिए दिया जानेवाला चन्दा या दान की धनराशि आयकर से मुक्त होगी। सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया ने यह अनुरोध स्वीकार कर लिया है कि वह निधि-एकत्रण के लिए एक माध्यम अथवा अभिकरण का कार्य करे और उसने अपनी सभी शाखाओं को दान स्वीकार करने का अधिकार प्रदान कर दिया है। बादशाह खान सालगिरह-समिति द्वारा रसीद-बहियाँ तथा कूपनादि छपवाये गये हैं, जो कि २, **राजेन्द्र प्रसाद रोड, नयी दिल्ली (दूरभाष ३८,३८००)** से प्राप्त किये जा सकते हैं।

अन्त में मैं यह कह देना भी आवश्यक समझता हूँ कि बादशाह खान का सम्मान या स्वागत करना किसी समिति-विशेष का कार्य नहीं है यह एक राष्ट्रीय कर्तव्य है। जो कोई भी इस कर्तव्य के पालन में पीछे रहता है, वह एक भारतीय नागरिक के कर्तव्य-पालन में पीछे रहेगा।

जयप्रकाश नारायण

www.vinoba.in

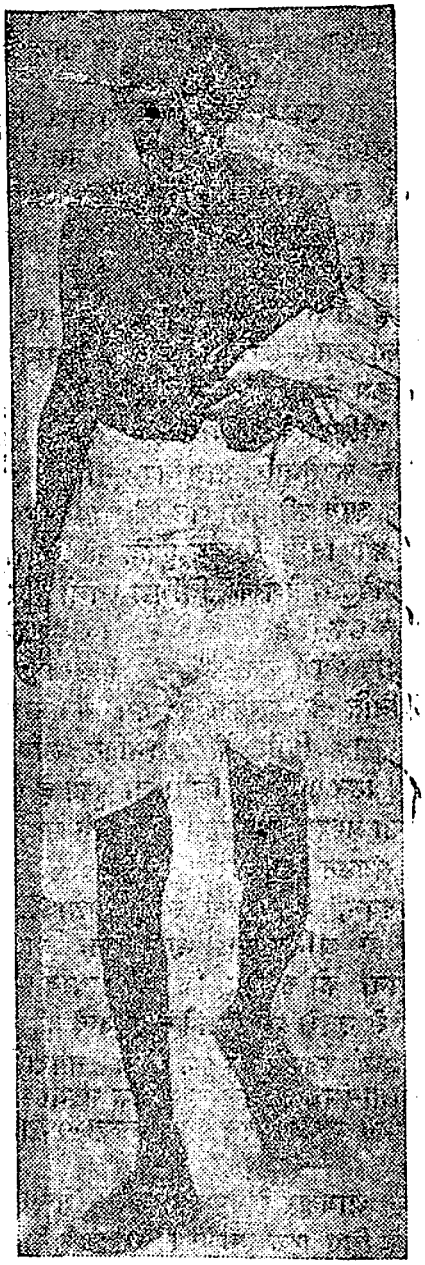

विवेकरहित विरोध

बनाम

बुनियादी परिवर्तन-प्रक्रिया

"शासन के खिलाफ विवेकरहित विरोध चलाया जाय तो उससे अराजकता की, अनियंत्रित स्वच्छंदता की स्थिति पैदा होगी और समाज अपने हाथों अपना नाश कर डालेगा।"

—गांधीजी

आज देश में आये दिन घेराव, धरना, लूटपाट, आगजनी, कथित सत्याग्रह की कार्रवाइयाँ लोकतंत्र में सामूहिक विरोध के हक़ के नाम पर होती हैं।

सर्वोदय-आन्दोलन भी वर्तमान समाज, अर्थ और शासन-व्यवस्था के खिलाफ विद्रोह है। किन्तु, वह इसका एक नियंत्रित, रचनात्मक एवं अहिंसक कार्यक्रम प्रस्तुत करता है।

इसके लिए पढ़िए, मनन कीजिए :—

(१) हिन्द स्वराज्य —गांधीजी

(२) ग्रामदान —विनोबाजी

फिर एक जिम्मेवार नागरिक के नाते समाज-परिवर्तन की इस क्रान्तिकारी प्रक्रिया में योग भी दीजिए।

गांधी रचनात्मक कार्यक्रम उपसमिति (राष्ट्रीय गांधी-जन्म-शताब्दी-समिति)
दुंकलिया भवन, कुन्दीगरों का भैरू, जयपुर-३ (राजस्थान) द्वारा प्रसारित।

www.vinoba.in

चरखे की क्रान्तिकारी अवधारणा आचरित कब होगी ?

[वर्षों से गांधी-जयन्ती को हम चर्खा जयन्ती के रूप में मनाते आ रहे हैं। गांधी और खादी को एक दूसरे का पर्याय माननेवालों के मन में सहज ही यह प्रश्न इस गांधी शताब्दी-वर्ष में पैदा हो रहा है कि गांधीजी ने जिस खादी को रचनात्मक कार्यक्रम के सौर-मण्डल में सूर्य का स्थान दिया था, उस सूर्य को कौन-सा राहु ग्रसता जा रहा है ? अगर गांधी के रचनात्मक कार्यों का सूर्य ही राहुग्रस्त हो गया तो क्या उनकी याद को अमर रखने में करोड़ों की योजनाएँ कामयाब हो सकेंगी ? इस चिन्ता से निकले हुए दो चिन्तन यहाँ प्रस्तुत हैं। प्रस्तुतकर्ता स्वयं खादी के वरिष्ठ सेवकों में से है। —सम्पादक]

विशेष छूट का सिलसिला समाप्त हो !

कई वर्षों से गांधी-जयन्ती के उपलक्ष में खादी पर ग्राहकों को विशेष छूट देने का सिलसिला चल रहा है। गांधी शतवार्षिकी के इस वर्ष में खादी-बिक्री पर भारी छूट की उम्मीद कार्यकर्ता तथा उपभोक्ताओं को है। अभी-अभी गांधी शतवार्षिकी के सिलसिले में मुंगेर (बिहार) जिले के प्रायः सभी प्रखंडों की गोष्ठियों में जाने का अवसर मिला। कई जगह लोगों की ओर से उक्त संदर्भ में प्रश्न पूछे गये। विशेष छूट कब से और कितनी मिलनेवाली है ? इसकी जानकारी जिला ग्राम स्वराज्य संघ का अध्यक्ष होने के बावजूद भी मुझे नहीं है। खादी कमीशन, सरकार, खादी बोर्ड तथा बिहार की सबसे बड़ी संस्था बिहार खादी ग्रामोद्योग संघ की इस दिशा में क्या तैयारी है, यह मुझे मालूम नहीं। इसलिए इन प्रश्नों का जब मेरे द्वारा नकारात्मक उत्तर ग्राहकों को मिलता था तो उनकी निराशा स्वाभाविक ही लगती थी।

दुःखद स्थिति तो यह है कि खादी के पुराने ग्राहक तथा मित्रों को अब तक हम संस्था वाले यह भी जानकारी नहीं करा सके हैं कि खादी पर विशेष छूट का पैसा आता कहाँ से है ? लगातार विशेष छूट का अभियान चलाकर हम लोगों ने ग्राहकों के मानस को बिगाड़ दिया है। आज स्थिति तो यह है कि थोड़े ही आदतन् खादी पहननेवाले उपभोक्ता होंगे, जिन्हें यह मालूम भी हो कि बिना काते सस्ती खादी खरीदने के विचार का गांधीजी से कोई सम्बन्ध नहीं है। गांधीजी ने कहा था—**"कातो समझ-बूझ कर कातो, जो कातो वह (खादी) पहने, जो पहने वह जरूर कातें।"** संस्था तथा कार्यकर्ताओं का ध्यान कितना गांधीजी के इस अमर वाक्य की ओर है, और कितना विशेष छूट की ओर; यह सर्वविदित है। अनेक अवसरों पर गांधीजी ने कहा है : **'खादी बेचने की चीज नहीं है, पहनने की चीज है।"** गांधीजी के 'काते सो पहने और पहने सो काते' इस विचार को मूर्त रूप देने की दिशा में विनोबाजी अभी जो कुछ कह रहे हैं, उसे अमल करने की दिशा में हमारी कहाँ तक तैयारी है ? रायपुर सर्वोदय सम्मेलन में त्रिविध कार्यक्रम के अन्तर्गत ग्रामाभिमुख खादी का विचार मान्य किया गया। इस प्रसंग में खादी जगत् के दो कर्णधार श्री ध्वजा बाबू तथा श्री करण भाई के साथ विनोबाजी की चर्चा सन् १९६६ में हुई थी। उसका उल्लेख यहाँ करना आवश्यक है। ग्रामाभिमुख खादी का पूरा-पूरा दर्शन कब तक हो सकेगा, चर्चा इस प्रसंग में हो रही थी। बाबा ने कहा, "तीन साल पर्याप्त है। इसलिए दस साल की अवधि तो मत बताइये, थोड़ा अरसा बताइये। कहिये कि इतने अरसे में हम पुराना ढङ्ग बन्द करके नया ढङ्ग शुरू करेंगे। छोटी मुद्दतवाला कार्यक्रम आपको तय करना चाहिए।...अगर ऐसी निश्चित मुद्दत आप तय कर लेते हैं तो उस मुद्दत के बाद पुराना ढङ्ग खतम करके, नये ढङ्ग में आ सकेंगे।"

करण भाई : तीन साल में, अर्थात् गांधी जन्म-शताब्दी (सन् १९६९) तक।

विनोबा : चार महीना अगर जल्दी हो जाय, तो गांधीजी को क्या बुरा लगेगा ? आज हम सन् '६६ की जुलाई में बोलते हैं, सन् '६९ की जुलाई तक होना चाहिए, ताकि गांधीजी की शतसंवत्सरी तक तो पूरा-का-पूरा नया चित्र देखने को मिले।

नये दर्शन को चार महीने हो चुके, ऐसा दिखे। हम जुलाई में बात कर रहे हैं तो जुलाई '६९ तक सब नया ढङ्ग आ जायगा और पुराना सब खतम होगा। अगर यह आप कहते हैं, करते हैं, तो तीन साल का सब्र हम रख सकते हैं। ऐसा है कि हम तो बेसब्र आदमी हैं, इस वक्त, उतावली ज्यादा है। लेकिन फिर भी इतना सब्र रखने को तैयार हो जाते हैं कि ठीक है, तीन साल रक्खो।"

खादी-आन्दोलन के दो वरिष्ट महारथियों से विनोबाजी की उपर्युक्त चर्चा के सार से यह स्पष्ट है कि यदि इस गांधी जन्म शताब्दी के अवसर पर, कम-से-कम बिहार में विनोबाजी के रहते-रहते, हम लोग खादी का कुछ भी नया दर्शन उपस्थित कर पाते तो यह गांधीजी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होती। **खादी-बिक्री पर सरकार तथा संस्था की ओर से चाहे कितनी भी बड़ी छूट इस अवसर पर क्यों न दी जाय, मुझे इसके साथ गांधीजी का नाम जोड़ना ठीक नहीं जँचता है। मुझे तो ऐसा लगता है कि यदि खादी कमीशन तथा खादी-संस्था के वरिष्ठ मार्ग-दर्शक गांधी शतवार्षिकी में खादी पर विशेष छूट देने का सिलसिला बन्द करने का निर्णय ले सकें, तो यह शतवार्षिकी की दृष्टि से बहुत ही उपयुक्त कदम होगा।** संस्था के पास जो खादी का बड़ा स्टाक है उसका क्या होगा यह विचारणीय प्रश्न है। इस पर अलग से विचार करना चाहिए। बिहारदान घोषित होने के बावजूद भी हम लोग क्या खादी का काम पुराने ढङ्ग से ही करते रहेंगे ? क्या ग्रामाभिमुख खादी के विचार को कार्यान्वित करने के लिए हम लोग जिस तरह काम कर रहे हैं, उस पर 'ब्रेक' लगाने के लिए एक तिथि निश्चित करना आवश्यक नहीं है ? गांधी शतवार्षिकी का यह पैगाम है कि इस पर विचार हो, और खादी को नयी दिशा देने के लिए बापू का **'करो या मरो'** का व्रत स्वीकार किया जाय।

रामनारायण सिंह, अध्यक्ष,
ग्रामस्वराज्य संघ,
बरियारपुर, मुंगेर

ग्रामाभिमुख खादी कहाँ ?

सन् १९६३ में हुए रायपुर सर्वोदय सम्मेलन में खादी कमीशन के द्वारा त्रिविध कार्यक्रम को स्वीकृति मिलने के बाद भी उसे कार्यान्वित करने की दिशा में कोई ठोस कदम उठाये जा रहे हैं, ऐसा प्रतीत नहीं हो रहा है। जहाँ-जहाँ प्रादेशिक या स्थानीय खादी संस्थाएँ हैं, वे सामयिक रूप से ग्रामदान का काम करती हैं। कहीं-कहीं शान्तिसेना में नाम लिखाने के लिए अपील करना, शोभा-यात्राएँ निकालना, सेमिनार आदि में योगदान करना, यह सब काम चलता होगा, लेकिन आई० डी० पी० या समग्र विकास योजना में ग्रामाभिमुख खादी, जो ग्राम अर्थनीति की कुंजी है, के प्रति जैसा और जितना ध्यान देना चाहिए, नहीं दिया जा रहा है, और उसकी ओर काम भी नहीं हो रहा है। खादी कमीशन या राज्य खादी बोर्डों की बैठकों में ग्रामाभिमुख खादी के लिए कोई गंभीर विचार हो रहा है, ऐसा नहीं लगता। इसके विपरीत, खादी का काम जिस ढंग से चलता है, उसमें उदासीनता की झलक दिखाई देती है। खादी में जो तत्त्व था, वह हमसे दूर होता जा रहा है।

इन दिनों खादी कमीशन नये-नये उन्नत तकनीक और अधिक उत्पादन के पीछे सारी शक्ति का विनियोग कर रहा है। देखना है कि ये नये-नये उन्नत यंत्र, नयी तकनीक अधिक उत्पादन की दिशा में ग्रामदानी गाँवों में कहाँ तक कामयाबी हासिल कर पाते हैं। अधिक उत्पादन करने की जो नयी-नयी पद्धतियों को अपनाने की बात चल रही है, और इसमें तालीम दिया जा रहा है, ग्रामदानी गाँवों में इसकी सफलता की आशा कम दिखाई देती है। इसके दो कारण मेरी समझ में आ रहे हैं—(१) एकाएक लोग नयी-नयी तकनीकों को अपनाने में कठिनाई का अनुभव करेंगे, और (२) नयी तकनीक में बिजली की आवश्यकता होती है, और बिजली गाँवों में बहुत ही कम जगह पहुँची है। अतः ग्रामाभिमुख खादी की दृष्टि से यह आवश्यक है कि जिस क्षेत्र के लिए जिन साधनों की आवश्यकता है, वहाँ उनका प्रचलन करना चाहिए, और उसमें आवश्यक तालीम की व्यवस्था होनी चाहिए। खादी-काम में बार-बार साधनों के 'मॉडल' में जो परिवर्तन हो रहे हैं, वे उतने हितकारी नहीं हो पा रहे हैं, जितने की अपेक्षा की जाती है। पहले जिन साधनों से काम लिया जा रहा था, वे बेकार हो जाते हैं, क्योंकि उनके पुर्जे नहीं मिलते। इससे अर्थ और समय, दोनों का अपव्यय हो रहा है, और खादी कमीशन के प्रति लोगों की श्रद्धा कम होती जा रही है।

समग्र विकास-योजना के अन्तर्गत समग्र विकास-क्षेत्र में समग्र विकास की दृष्टि से स्थानीय परिस्थिति को देखकर ग्राम-अर्थ-नीति के चतुःस्तंभ, यथा—कृषि, गोपालन, खादी और ग्रामोद्योग, इनमें से किसे प्राथमिकता देनी है, इसकी स्थानीय कर्मी के ऊपर जिम्मेदारी न देकर, केवल खादी के उत्पादन और उसकी बिक्री के ऊपर खादी कमीशन के संचालक जोर दे रहे हैं, जिसका फल हो रहा है कि समग्र विकास-योजना अपने रास्ते से दूर होती जा रही है। इसके ऊपर कमीशन को काफी गम्भीरता के साथ चिन्तन करना चाहिए। ग्राम-अर्थनीति में खादी का एक खास स्थान है, लेकिन खादी में जो भिन्न-भिन्न प्रकार की दुर्नीतियाँ देखी जा रही हैं, वे खादी-दर्शन में बाधक के रूप में खड़ी होती हैं। गांधीजी अगर जिन्दा रहते, तो उनकी प्रिय खादी को इस स्थिति में देखकर उनकी आत्मा को काफी चोट पहुँचती। ग्रामदानी क्षेत्रों में खादी को चलाना है तो निष्ठा और तत्त्व के साथ चलायी जाय, नहीं तो आज जो चल रहा है, उसका अनुकरण वानरीकरण का रूप ले लेगा, जो सर्वदा निन्दनीय, उपेक्षणीय है।

मेरा दृष्टिकोण शायद बहुतों को पसन्द नहीं आयेगा, उनको तकलीफ होगी। इसके लिए क्षमा-याचना कर रहा हूँ। मैं चाहता हूँ कि खादी खादी बनकर रहे।

—मदन मोहन साहु,
अध्यक्ष,
उत्कल ग्राम-स्वराज्य विद्यालय, गोपालबाड़ी,
डा०—जम्टाबड़ा (रायगड़ा),
जि० — कोरापुट (उड़ीसा)

भूदान-आन्दोलन के समाचार

कर्नाटक में ५५ नये ग्रामदान

विलंब से प्राप्त समाचार के अनुसार १८ से २० जुलाई तक कर्नाटक के ग्रामदान कार्यकर्ताओं का शिविर बिजापुर खादी ग्रामोद्योग संघ के तत्वावधान में श्री अण्णा-साहब सहस्रबुद्धे की अध्यक्षता में हुआ और उस शिविर के बाद ही बिजापुर का जिला-दान अभियान चलाया गया। सबसे पहले सिंदगी तालुका में ५५ ग्रामदान मिले। इस पदयात्रा में ९५० रुपये की साहित्य-बिक्री और ५१ भूदान-यज्ञ के ग्राहक बनाये गये।

एक अन्य समाचार के अनुसार अगस्त में इंडि तालुका में ग्रामदान-अभियान के लिए पदयात्रा करनेवाली टोलियों को ७१ ग्रामदान प्राप्त हुए हैं। ज्ञात हुआ है कि ७००० की आबादी वाले चडचण गाँव के साथ ही तडवलगा, अगरखेड, बतगुणी, होर्ति जैसे अधिक आबादी वाले गाँवों ने भी अपना ग्रामदान घोषित किया है। इस यात्रा में १३३८ रुपये की साहित्य-बिक्री हुई और ४८ भूदान पत्रिका (कन्नड़) के ग्राहक बने। ७६२ रुपये का जनसहयोग प्राप्त हुआ।

विनोबा-जयन्ती पर भिण्ड जिलादान की सम्भावना

प्राप्त जानकारी के अनुसार ग्रामदान-आन्दोलन के अन्तर्गत भिण्ड जिलादान पूरा होने के अन्तिम चरण में हैं। जिले के कुल ८९० गाँवों में से ७०० ग्रामदान हो गये हैं। शेष के लिए अभियान जारी है। अभियान का संयोजन भिण्ड जिला गांधी शताब्दी-समिति तथा चम्बल घाटी शान्ति-समिति के संयुक्त तत्वावधान में हो रहा है।

यह सम्भावना है कि आगामी ११ सितम्बर (विनोबा-जयन्ती) तक भिण्ड जिलादान घोषित हो जाये। (सप्रेस)

मध्यप्रदेश सरकार के लगभग सभी मंत्री 'भूदानयज्ञ' साप्ताहिक के ग्राहक

भारत का यह पहला ही प्रदेश है जिसमें प्रदेशीय मंत्रिमण्डल के सभी सदस्य 'भूदान-यज्ञ' साप्ताहिक के ग्राहक हैं और नियमित रूप से

सर्वोदय-आन्दोलन की अद्यतन जानकारी प्राप्त करते रहते हैं। इन मंत्रियों की अभिरुचि जागृत करने एवं निरंतर पोषण देते रहने का श्रेय प्रदेशीय गाँधी जन्म-शताब्दी-समिति के संगठनसचिव श्री चतुर्भुज पाठक को दिया जा सकता है। मध्य-प्रदेश में प्रयास चल रहा है कि गांधीशताब्दी तक सभी विधायक 'भूदानयज्ञ' के पाठक बन जायें।•

www.vinoba.in

पूर्णियाँ जिले की भावी योजना

रानीपतरा। गत १८ अगस्त को हुई सर्वोदय आश्रम, रानीपतरा की प्रबंध समिति की बैठक में सर्वसम्मति से सर्वश्री नरसिंह नारायण सिंह, अध्यक्ष; गुलाबचन्द साहु, उपाध्यक्ष और गणेश प्रसाद सिंह मंत्री चुने गये।

जिला गांधी जन्म-शताब्दी-समिति, पूर्णियाँ ने जिलास्तर पर एक पदयात्रा टोली निकालने का निश्चय किया है ताकि गांधी-शताब्दी का विचार गाँव-गाँव में पहुँच जाय।

१९-२० अगस्त को सर्वोदय आश्रम रूपौली में जिले के खादी कार्यकर्ताओं की वार्षिक गोष्ठी हुई जिसकी अध्यक्षता की श्री गोपाल झा शास्त्री ने। इस गोष्ठी में लगभग २०० कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। आवास-आहार की संपूर्ण व्यवस्था स्थानीय लोगों ने ही की थी। श्री वैद्यनाथ प्रसाद चौधरी ने जिलादान के पूर्व की स्थिति और जिलादान के बाद के कार्यक्रमों का विवेचन करते हुए कहा कि प्रत्येक गाँव में आप लोगों का प्रवेश है, अतएव गांधीजी के रचनात्मक कार्यों को पूरी मुस्तैदी से गाँववालों के बीच पहुँचाइये। कार्यकर्ताओं से अपील करते हुए श्री वैद्यनाथ बाबू ने कहा कि नित्य कताई का क्रम चले, खादी-भण्डार एक सौ नये लोगों को खादीधारी बनने का संकल्प करायें, प्रत्येक रेवेन्यू गाँव में 'भूदान-यज्ञ' साप्ताहिक, 'ग्रामोदय' साप्ताहिक या 'गाँव की आवाज' पाक्षिक में से कोई-न-कोई पत्रिका अवश्य पहुँचे, प्रत्येक प्रखण्ड में सर्वोदय सम्मेलन की स्वागत समिति के २५ सदस्य बनाये जायँ, नवम्बर से पुष्टिकार्य-हेतु लगने की तैयारी अभी से कर ली जाय।•

दैनंदिनी १९७०

प्रति वर्ष की भाँति सर्व सेवा संघ की सन् १९७० की दैनंदिनी शीघ्र ही प्रकाशित हो रही है। इस दैनंदिनी के ऊपर प्लास्टिक का चित्ताकर्षक कवर लगाया गया है। इसकी कुछ विशेषताएँ इस प्रकार हैं :

१. इसके पृष्ठ रूलदार हैं।

२. इसके प्रत्येक पृष्ठ पर गांधीजी के प्रेरक वचन दिये गये हैं।

३. इसमें भूदान-ग्रामदान आन्दोलन की अद्यतन जानकारी तथा सर्व सेवा संघ के कार्य की संक्षेप में जानकारी दी गयी है।

४. नित्य की तरह यह दैनंदिनी दो आकारों में छपायी गयी है, जिसकी कीमत प्रति दैनंदिनी निम्न अनुसार है :

(अ) डिमाई साइज : ९" × ५॥" रु० ३.५०
(ब) क्राउन साइज : ७॥" × ५" रु० ३.००

आपूर्ति के नियम

१. विक्रेताओं को २५ प्रतिशत कमीशन दिया जायगा।

२. एकसाथ ५० अथवा उससे अधिक प्रतियाँ मँगाने पर ग्राहक के निकटतम स्टेशन तक दैनंदिनी फ्री पहुँच भिजवायी जायगी।

३. इससे कम संख्या में दैनंदिनी मँगाने पर पैकिंग, पोस्टेज और रेल-महसूल ग्राहक को वहन करना पड़ेगा।

४. भेजी हुई दैनंदिनी वापस नहीं ली जाती, अतः आप इसकी उतनी ही प्रतियाँ मँगायें, जितनी आप बेच सकें।

५. दैनंदिनी की बिक्री पूर्णतया नकद की रखी गयी है, अतः आप कीमत अग्रिम भिजवाकर या वी० पी० या बैंक के मार्फत दैनंदिनी प्राप्त कर सकते हैं।

६. आर्डर देते समय आप अपना नाम, पता और निकटतम रेलवे स्टेशन का नाम सुवाच्य लिखिए और यह निर्देश स्पष्ट रूप से दीजिए कि दैनंदिनी की बिल्टी वी० पी० या बैंक से भेजी जाय या आप दैनंदिनी की रकम अग्रिम भिजवा रहे हैं।

अक्सर देखा गया है कि देरी से आर्डर आने के कारण अनेकों को निराश होना पड़ता है। इसलिए विशेष रूप से अनुरोध है कि उपर्युक्त शर्तों को ध्यान में रखते हुए आप अपना आदेश अविलम्ब भिजवा देंगे।

आपका,
दत्तोबा दास्ताने
सहमंत्री
सर्व सेवा संघ-प्रकाशन,
राजघाट, वाराणसी-१

भूदान-यज्ञ ८-९'६९ रजिस्टर्ड नम्बर एल. ३५४ [पहले से डाक-व्यय दिये बिना भेजने की स्वीकृति प्राप्त] लाइसेन्स नम्बर ए ३४

www.vinoba.in

बिहार में अब सिर्फ ५६ प्रखण्ड बाकी
शेष सभी प्रखण्डों का दान सम्पन्न

बिहार ग्रामदान प्राप्ति समिति के सहमंत्री श्री कैलाश प्रसाद शर्मा की सूचना के अनुसार अब सिर्फ राँची में ३१, संताल परगना में १४ और सिंहभूम में ११ प्रखण्ड बाकी हैं। २६ अगस्त को जमशेदपुर में बाबा को सिंहभूम के दो अनुमण्डलदान धालभूम, सरायकेला समर्पित किये गये। तीनों जिलों में क्रमशः ७५, ५० और ७२ कार्यकर्ता कार्यरत हैं। सिंहभूम में डा० पटनायक, भाई गोखले सहित स्थानीय कार्यकर्ताओं की शक्ति लगी है। राँची में सुश्री निर्मला देशपांडे, हरिवल्लभ परीख, सुन्दरलाल बहुगुणा भी आकर लगे हैं। गुजरात की टोली—कान्ता-हरविलास बहन, डा० नवनीत फौजदार—दानसंग्रह तथा साहित्य-प्रचार में जुटी है। संताल परगना में श्री मोतीलाल केजरीवाले रातदिन एक किये हुए हैं, वहाँ का काम पूरा करने में।

आशा की जाती है कि सबसे पहले सिंहभूम का काम पूरा होगा। •

मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री इन्दौर के सर्वोदय-साहित्य-भंडार में

गत ११ अगस्त '६९ को मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री श्यामाचरणजी शुक्ल 'सर्वोदय साहित्य भण्डार' पर पधारे। श्री दादाभाई नाइक, श्री चन्दन सिंहजी भरकतिया, जसवन्तराय भाईजी एवं भण्डार व सर्वोदय साहित्य के अन्य प्रेमी-सहयोगी महानुभाव इस सुअवसर पर उपस्थित थे।

माननीय मुख्यमंत्री ने म० प्र० शासन द्वारा सामान्यतया अपने सभी सर्वोदय साहित्य के तथा विशेष रूप से गांधी शताब्दी सेट के अधिकाधिक क्रय करने का आश्वासन दिया।

म० प्र० के मुख्य मंत्री (काली जैकेट वाले) सर्वोदय साहित्य-भण्डार में

मुख्यमंत्री की अपील

'आगामी २ अक्तूबर १९६९ को हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जन्म शताब्दी आ रही है। इस सुअवसर पर गांधी स्मारक निधि, सर्व सेवा संघ-प्रकाशन और गांधी शांति प्रतिष्ठान के सम्मिलित सहयोग से गांधीजी की वाणी घर-घर पहुँचे, इस दृष्टि से गांधीजी की अमर जीवनी, कार्य तथा विचारों से संबंधित १००० पृष्ठों का अत्यन्त उपयोगी और चुना हुआ साहित्य-सेट मात्र ५ रु० में देने का निश्चय किया गया है।

गांधी जन्म शताब्दी के अवसर पर हम सबकी शक्ति इस कार्य में लगनी चाहिए। प्रत्येक संस्था और व्यक्ति, विशेषकर मध्य-प्रदेश की शिक्षण-संस्थाएँ एवं औद्योगिक संस्थान तथा जन साधारण, जो गांधी शताब्दी में दिलचस्पी रखते हैं, इस सेट के अधिकाधिक प्रचार या प्रसार-कार्य में सहायक होंगे ऐसी आशा, अपेक्षा एवं अनुरोध है।"

श्यामाचरण शुक्ल
मुख्यमंत्री, म० प्र० शासन, एवं
अध्यक्ष, म० प्र० गांधी जन्म शताब्दी समिति

राँची में विनोबा-जयन्ती

११ सितम्बर '६९ को बाबा अपने जीवन के ७५ साल पूरे करेंगे। उस दिन वे राँची में रहेंगे। राँची के नागरिकों की ओर से बाबा की जयन्ती-समारोह मनाने के लिए स्थानीय नागरिकों की एक समिति बनी है, जिसके संयोजक हैं डा० एन० पी० श्रीवास्तव। मंगलकामना के कार्यक्रम में सर्वधर्म सद्वचन-पाठ और भारत की सभी प्रमुख भाषाओं में भजन-गायन मुख्य हैं।

इस अवसर पर देश भर से ग्रामदान-प्रखण्डदान और जिलादान की भेंट बाबा को समर्पित किये जाने की सम्भावना है।

भारत की प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी उस दिन राँची में रहेंगी, सम्भवतः वे बाबा से मिलें।

—विशेष संवाददाता

वार्षिक शुल्क : १० रु०, (सफेद कागज। १२ रु०, एक प्रति २५ पैं०), विदेश में २० रु०; या २५ शिलिंग या ३ डालर। एक प्रति २० पैसे।
श्रीकृष्णदत्त भट्ट द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं इण्डियन प्रेस (प्रा०) लि० वाराणसी में मुद्रित।